نحمدہٗ ونصلی علی رسولہ الکریم

افضل الذکر لا الٰہ الا اللہ محمد رسول اللہ

नूरूल-ईमान

उर्फ

कलमए असरार

खाकपाए पीर कहमी ख्वाजा शेख मोहम्मद फारूक शाह कादरी

अल चिश्ती इफ्तेखारी **मारूफ पीर** अफी अनहो

अरकान

किताब का नाम : नूरुल-ईमान उर्फ कलमए असरार

मुसन्निफ : ख़्वाजा शेख़ मोहम्मद फारूक़ शाह क़ादरी अल-चिश्ती इफ्तेख़ारी मारूफ पीर

नौइते इशाअत : बारे अव्वल

तादादे इशाअत : 600

मुक़ामे इशाअत : बमौक़ए जश्ने ग़ौसुल-वरा व ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ व पीर आदिल बीजापूरी र.अ.

तारीख़े इशाअत : 22 नव्हेम्बर 2009.
बमुताबिक़ 4 ज़िल-हज 1430 हिजरी

कम्प्युटर कम्पोजिंग : डिसेंट क्रिएशन्स - 9773039800.

कीमते किताब : 80 रूपये

किताब मिलने के पते

❊ हज़रत पीर फहमी, ख़ानकाहे क़ादरी अल-चिश्ती आदिल फहमी नवाज़ी, आदिल नगर, आकाशवानी, गेट नं.7, मालवानी कॉलनी, मलाड (वेस्ट), मुम्बई - 95

❊ अफसर शाह क़ादरी, भगत सिंग नगर नं.1, लिंक रोड, गोरेगांव (वेस्ट), मुम्बई - 104

❊ अब्दुल्लाह शाह क़ादरी, ग़रीब नवाज़ नगर, कोकरी आगार, एस.एम. रोड, ॲन्टॉप हिल, मुम्बई - 37

❊ शेख़ शाहीन शाह क़ादरी, हाउस नं. 9-8-109/अ/76, गोल कुंडा, सॉलेह नगर, कंचा, हैदराबाद

❊ मोहम्मद मौला शाह क़ादरी, B-2/10/2, सेक्टर नं.15, वाशी, नई मुम्बई - 703

❊ साजिद शाह क़ादरी, हव्वा बी की चाल, ईदगाह मैदान, जोगेश्वरी (ई), मुम्बई .95

फेहरिस्त

बतारीख़ : 22 नोव्हेंबर 2009

इन्तेसाब

نحمدہٗ و نصلی علیٰ رسولہ الکریم

लाख लाख शुक्र व अहसान उस रब्बुल-आलमीन का जिसने जामए इन्सानी अता फरमा कर अपने मेहबूबे पाक मोहम्मदुर-रसूल अल्लाह स.अ.व. का उम्मती बनाया। करोड़ों दरूद व सलाम आकाए नामदार मदनी ताजदार अहमदे मुजतबा मोहम्मद मुस्तफा स.अ.व. व सद दर सद शुक्र व अहसान शहेनशाहे विलायत पेशवाए तरीकत सय्यदना अब्दुल कादिर जीलानी मेहबूबे रब्बानी व ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ हिंदलवली अताए रसूल व तमाम मशायख़ीन रिज़्वान अल्लाह तआला अजमईन का जिनकी रूहानी इम्दाद हर दम कदम पर शामिले हाल है।

ख़ाकसार ना तो आलिम है ना मुअल्लिम, हकीर मन फकीर खुद बारगाहे अहले तरीकत का अदना सा तालिबे इल्म है। यह मेरे पीरे कामिल सुल्तानुल-तरीकत गंजुल-हकीकत बुर्हानुल-मअरिफत हज़रत ख़्वाजा शेख़ मोहम्मद अब्दुल रऊफ शाह कादरी अल-चिश्ती इफ्तेख़ारी पीर फहमी मदज़ल्लहू आली दामते बर्कातहुम की बंदा पर्वरी व ज़र्रा नवाज़ी है जिन्होंने मुझ जैसे नाकिसुल-अक़्ल को अपने दामने आग़ोश में पनाह अता करके अपने उलूमे बातिनी व फुयूज़े रब्बानी व असरारे मख़्फी की लाज़वाल दौलत से माला माल किया, जिसका समरा किताबे हाज़ा "नूरूल-ईमान" जो कारईन के पेशे नज़र है।

गर कबूल इफ्तेदज़ है इज़्ज़ो शर्फ

ख़ाकपाए पीर फहमी ख़्वाजा शेख़ मोहम्मद फारूक शाह कादरी
अल-चिश्ती इफ्तेख़ारी मारूफ पीर

दावते फिक्र

यूं तो सय्यद भी हो मिर्ज़ा भी हो अफगान भी हो
तुम सभी कुछ हो बताओ तो "सही" मुसल्मान भी हो

(अल्लामा इक़्बाल)

आज दुनिया का अकसर कलमागो खुद को मुसल्मान होने का दम भर रहा है। हत्ता के इस ज़ामे बातिला के सबूत की खातिर खूं गीरी पर आमदा हो चुका है। इस लिबासे मुसल्मानी के जुब्बे व कुब्बे में ऐसे ला तादाद ईमान खोर शयातीन व मुनाफिकीन व मुश्रिकीन पोशिदा हैं। जिन्हें खुली आँख से देखकर भी मोमिन व मुनाफिक का पता नहीं चलता। मसलन किसी बर्तन में रखे हुए पानी को देख कर कोई बता सकता है के यह पानी मीठा है या खारा? हरगिज़ नहीं बता सकता जब तक उस पानी को चख ना ले। ठीक इसी तरह से लफ्ज़े मुसल्मान में इफ्राक व इम्तीयाज़ मौजूद हैं। इस में मोमिन व मुनाफिक पोशिदा व मख्फी हैं। हज़रत ख्वाजा बन्दा नवाज़ गेसूदराज़ अलैह रहमा फरमाते हैं।

मुँह से कहें शक्कर तो जुबां को नहीं मज़ा
जिसने चखा जुबां पर लिज़्ज़त वही लिया

पानी की पहचान चखने से होगी और मोमिन की पहचान तहकीके कलमा से होगी। हालाँके कुर्आन मजीद ने फुर्काने हमीद की रौश्नी में उन मुनाफिकीन के उस खयाले बातिला की नफी की बल्के उन्हें कल्बी तौर पर मरीज़ होने की सनद भी दी।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَقُوْلُ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَبِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَمَا هُمْ بِمُؤْمِنِيْنَ. يُخٰدِعُوْنَ اللّٰهَ وَالَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَمَا يَخْدَعُوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ. فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ

तर्जुमा : और कुछ लोग कहते हैं के हम अल्लाह और पिछले दीन पर ईमान लाए और वह ईमान वाले नहीं, फरेब देना चाहते हैं अल्लाह और ईमान वालों को और हकीकत में फरेब नहीं देते मगर अपनी जानों को उन्हें इस का शऊर नहीं। उनके दिलों में बीमारी है।

(सूरह बक़्रा – आयत 8–9)

अब सवाल यह है के हम मोमिन व मुनाफिक किस को कहें तो फिकए इस्लाम ने इस मसले को दो खुसूस्यात में दर्ज फरमाया।

अव्वल इक़रार बिल्लिसान - दुव्वम तस्दीक बिलकल्ब ... जैसा के इमामे आज़म अबू हनीफा र.अ. का कौल है- " ईमान दिल की तस्दीक और जुबान के इक़रार का नाम है" और आज़ा के आमाल नफ्से ईमान से खारिज हैं। हां वह ईमान में कमाल बढ़ाते हैं और हुस्न पैदा करते हैं। जो भी कलमाए तय्यब के इन दो मुत्तालबात को अच्छी तरह पूरा करता है हम उनको बिलाशुबा अज़रुए इस्लाम मोमिन व मुस्लिम कह सकते हैं। हालाँके मोमिन व मुस्लिम में भी ज़मीन व आसमान का फर्क मौजूद है। जैसा के सूरह अहज़ाब आयत 35 में मुसलमान मर्द और मुसलमान औरत, मोमिन मर्द और मोमिन औरत का अलग अलग ज़िक्र करके दोनों में फर्क वाज़ेह किया गया के ईमान का दर्जा इस्लाम से बढ़कर है जैसाके कुर्आन व हदीस के दीगर दलाएल भी इस पर दलालत करते हैं। बहर हाल, मेरी तहरीक का मक़्सद "दावते फिक्र" है। मैं उन लोगों को दावते फिक्र दे कर बेदार करना चाहता हूं जो महज़ जुबानी जमा खर्च को ईमान समझ कर जन्नत व हूरों के ख्वाब में मुब्तला हैं। मैं उन लोगों को दावते फिक्र देता हूं जो अपनी ला शऊरी के बाइस कल्बी अम्राज़ में गिरफ्तार हैं। मैं उन लोगों को दावते फिक्र देता हूं जो जकड़ालू मौलवियों के दामे फरेब में नज़र बंद होकर उनके नक्शे पा को ज़रियाए निजात समझकर कोल्हू के बैल के मानिंद चल रहे हैं। खैर आमदम बर सरे मतलब, कलमाए तय्यबा पढ़कर समझने और समझकर पढ़ने के लिए पेश किया गया। जिसने भी एक मर्तबा कलमाए तय्यबा समझ कर पढ़ा उस के लिए

कलमाए तय्यब आने वाहिद में "कलीदे मग़फिरत" बनकर दरवाज़ाए निजात खोल देता है। जैसे हदीसे पाक में हज़रत अबू बकर सिद्दीक र.अ. से मरवी है के मैंने रसूल अल्लाह स.अ.व. से पूछा के।

مَانَجَاةُ هٰذَا الْاَمْرِ ؟ فَقَالَ مَنْ قَبِلَ مِنِّى الْكَلِمَةَ الَّتِى عَرَضْتُهَا عَلٰى عَمِّىْ فَرَدَّهَا فَهِىَ لَهُ نَجَاةٌ:

तर्जुमा ः इस दीन में निजात का खास नुक़्ता क्या है? तो आप स.अ.व. ने फरमाया जिसने मेरा लाया हुवा कलमा मेरी दावत पर कबूल कर लिया जो मैंने अपने चचा पर पेश किया था यही कलमा असल नुक़्तए निजात है। (मसनद इमामे अहमद)

जुबां से कह भी दिया 'ला इलाहा' तो क्या हासिल
दिल व निगाह मुसलमां नहीं तो कुछ भी नहीं
(अल्लामा इक़्बाल)

हदीसे पाक ः مَنْ قَالَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ اَلْفَ مَرَّةٍ اِلَّا بِالتَّحْقِيْقِ فَهُوَ كَافِرٌ.
तर्जुमा ः "जिसने कलमाए तय्यब को बिगैर तहकीक हज़ार बार कहा वह काफिर है"।

बिला तहकीक तस्दीक बिलकल्ब मुम्किन नहीं और बिला तस्दीक जुबानी इक़्रार सिवाए दरोग़ गोई के कुछ भी नहीं। हज़रत पीर आदिल बिजापूरी र.अ. फरमाते हैं।

" तहकीक कर तस्दीक कर कलमागो बन जाएगा "

मस्लन अगर किसी जगह कोई हादसा दरपेश हो जाए तो पुलिस वाले आकर पहले मुआमले की तहकीक करते हैं फिर हादसे की तस्दीक करते हैं फिर थाने में जाकर उस हादसे की गवाही देते हैं।

तहकीके कलमा में बारीक नुक्ता नफी व अस्बात हैं। जिस में दो

कुफ्र चार शिर्क चार तौहीद के दर्जे पोशिदा हैं।

हुजूर अकरम स.अ.व. हज़रत उमर फारूक र.अ. से फरमाते हैं मोमिन वह नहीं जो मस्जिद में जमा होते हैं और जुबानी तौर पर لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ कहते हैं। ऐ उमर र.अ. ऐसे कलमागो हकीकत से बे बहरा और बे खबर हैं। यह मोमिन नहीं हैं बल्के मुनाफिक हैं। क्युँके जुबान से तो कलमा لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ का इक़रार करते हैं लेकिन कलमा के असल माना से ना वाकिफ हैं। उन्हें खाक भी पता नहीं है के कलमा से असल मक़्सूद क्या चीज़ है। यानी لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ तो कह लेते हैं लेकिन उनको क्या खबर के नेस्त से क्या मुराद है और हस्त से क्या? ऐसा शक्की तौर पर कलमा कहना शिर्क है और शिर्क शक ऐन कुफ्र है। ऐसे कलमागो काफिर कहलाते हैं क्युँके उन्हें यह नहीं मालूम के कलमा मे किस की नफी मुराद है और किस का अस्बात?

(अज़ गंजुलअसरार ख्वाजा ग़रीब नवाज़ र.अ.)

इस लिए कलमाए तय्यबा के रूश्द व हिदायत के वास्ते पीरे कामिल की अशद ज़रूरत होती है। ताके वह अपने इल्म व अमल से तालिब के शक व शुब्हात की नफी करके बातिनी कुव्वत से कलमा के उरूज व नुजूल तै कराके इसको मुजस्समे कलमा बना दे। खयाल रहे तौहीद के बिलमुकाबिल शिर्क दस्तक दे रहा है। हर गुनाह काबिले उफ़ू है सिवाए शिर्क के।

اِنَّ اللّٰہَ لَا یَغْفِرُ اَنْ یُّشْرَکَ بِہٖ وَیَغْفِرُ مَادُوْنَ ذَالِکَ لِمَنْ یَّشَاء

(सूरह निसा आयत 116)

तर्जुमा ः यकीनन अल्लाह नहीं बख़्शेगा शिर्क को और बख़्श देगा इस के अलावा गुनाह जिसके चाहेगा।

अंजामे सफर सोचा ही नहीं मंज़िल पे चरागाँ क्या होगा
तहकीक नहीं तस्दीक नहीं फिर कामिले ईमां क्या होगा
(हज़रत पीर आदिल र.अ.)

सुल्तानुल आरिफैन हज़रत सुल्तान बाहू र.अ. फरमाते हैं। ऐ तालिब मैं तुझको कलमाए तय्यबा की तारीफ बतलाता हूँ। जानना चाहिए के कलमा तय्यबा की तह विसाल है और इन्तेहा कलमा तय्यबा की मुशाहदा इलाही है। पस इस से मालूम हुआ के रस्म के मुताबिक कलमा पढ़ने वाले गो कलमा को नहीं जानते। गो वह जुबान से कलमा पढ़ते हैं मगर वह कलमा उनके हलक के अंदर से नीचे नहीं उतरता है । बल्के कलमा जुबानी और है और तस्दीक और है। पस जिस किसी को कलमे की मारिफत हासिल हो गई वह साहबे मारिफते इलाही है और उस की रूह ज़िंदा और उस का नफ्स फानी है। पस जो उश्शाक हैं वो ही इस कलमे की तारीफ को जान सकते हैं। और उस के साथ वासिले हक हो जाते हैं।

हम ज़माने को हकीकत की ज़िया देते हैं
कल्बे काफिर को मुसलमान बना देते हैं
(हज़रत पीर आदिल र.अ.)

पीरे कामिल अहले दिल होता है और दिल वाला ही दिल की हकीकत से आगाही बखश सकता है। जिस से तस्दीक बिलकल्ब की दौलत नसीब होती है। वाज़ेह हो कल्ब के माना उलटने और बदलने के हैं। दिल को भी कल्ब इस लिए कहते हैं के वह बाँए पहलू में उलटा लटका हुआ है, जो मरकज़े हयात है। खून को तमाम जिस्म में पहुँचाना इसी के ज़िम्मे होता है। जिस्म में सब से पहले जो शए हरकत करती है वह दिल है और आखिर में जो उज़ू ग़ैर मुतहरिक होता है वह दिल है।

हुज़ूर अकरम स.अ.व. फरमाते हैं हर चीज़ के दो पहलू होते हैं। एक ज़ाहिरी दूसरा बातिनी। और कुर्आन करीम के भी माना के दो पहलू हैं। एक ज़ाहिरी माना - दूसरा बातिनी माना। इस लिहाज़ से कल्ब के भी दो पहलू हैं, एक कल्बे ज़ाहिरी - जो गोश्त का लोथड़ा है जिसे कल्बे मिजाज़ी से ताबीर किया गया। दूसरा कल्बे बातिनी जो लतीफाए रब्बानी जोहरे लासानी है जिसे कल्बे हकीकी के नाम से मौसूफ किया गया है। जो इन्सान के साथ मख्सूस है। जिसकी वजह से इन्सान तमाम मख्लूक में अफज़ल हुआ। जिस तरह गोश्त के लोथड़े यानी कल्बे मिजाज़ी के साथ जान कायम है इसी तराह लतीफाए रब्बानी यानी कल्बे हकीकी के साथ ईमान कायम है। लिहाज़ा कल्बे हकीकी के ऐतबार से भी तीन तरह के कल्ब होते हैं।

अव्वल कल्बे मोमिन ः

मोमिन का कल्ब जो सिफातुल्लाह इस्मे मोमिन का मज़हर होता है।

हुज़ूर अकरम स.अ.व. का इर्शादे पाक है। अल्लाह तआला मोमिन के कल्ब की तरफ हर रोज़ तीन सौ साठ मर्तबा नज़रे लुत्फ व करम फरमाता है। हर नज़र में इब्तेदा और इआदा फरमाता है। निगाहे लुत्फ व करम से मुराद ज़िक्रे कल्बी لَآاِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ की तौफीक अता करना है। जिसकी वजह से बंदाए मोमिन का कल्ब ज़िंदा व जावेद रहता है।

बग़ैर ज़िक्रे खुदा दिल नहीं ज़िंदा रहता
दिले मुर्दार को हर जा पे परेशाँ देखा

(हज़रत पीर आदिल र.अ.)

हुज़ूर अकरम स.अ.व. फरमाते है ः قَلْبُ الْمُوْمِنِ اَصْبَعَيْنِ مِنْ اَصَابِعِ الرَّحْمٰنِ

तर्जुमा ः मोमिन का कल्ब रहमान की दो उँगलियों के दर्मियान है।

(मुस्लिम शरीफ)

दो उँगलियों के मानी जलाल व जमाल हैं। कलमाए तय्यबा के दो जुज़ हैं। पहला जुज़ तौहीद لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه जो जलाल है। दूसरा जुज़ रिसालत مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ जो जमाल है। कल्बे मोमिन जलाल व जमाल के दर्मियान रहने के बाइस इस में वस्वसे शैतानी का ग़ल्बा कम हत्ता के ना के बराबर और इल्हामे रहमानी यानी पाकीज़ा ख़यालात की कसरत ज़्यादा होती है।

दूसरा कल्बे मुस्लिम ः

मुस्लिम का कल्ब तस्दीके ईमान की नेअमत से महरूम होता है।

قُلْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا وَلٰكِنْ قُوْلُوْا اَسْلَمْنَا وَلَمَّا يَدْخُلِ الْاِيْمَانُ فِىْ قُلُوْبِكُمْ۔

तर्जुमा ः आप कह दीजिए के दर हकीकत तुम ईमान नहीं लाए लेकिन तुम यूँ कहो के हम इस्लाम लाए हालाँके अभी तक तुम्हारे दिलों में ईमान दाखिल ही नहीं हुआ। (सूरह हुजरात आयत 14)

चूँके बगैर तस्दीक मुस्लिम का कल्ब ग़फ्लत का महल बन जाता है।इस में आहिस्ता आहिस्ता मुनाफिकत का अंधेरा बढ़ने लगता है जिसके बाइस उनके कल्ब में वस्वसे शैतानी का ग़ल्बा ज़्यादा पाकीज़ा खयालात कम हो जाते हैं। अगर इस मर्ज़ का इलाज किसी काबिल तबीबे रूहानी से करा लिया जाए तो सेहत हो जाती है वर्ना यह मर्ज़ बढ़ते बढ़ते इस हद तक पहुँच जाता है के दिल में अच्छे खयालात का आना ही बंद हो जाता है और कभी यहाँ तक तरक्की हो जाती है के बुरे कामों को अच्छा और अच्छे कामों को बुरा समझने लगता है और बद कारों को अज़ीज़ रखने और नेककारों से नफरत करने लगता है इसी को दिल की मौत कहा जाता है। बहरे कैफ यह ज़रूर है के मुस्लिम को ईमान की पूरी दौलत से मुशर्रफ होना आसान है क्यूँके उसने ईमान की पहली शर्त इक़्रारे बिल्लिसान व अहकामे शरियत में गामज़न हैं। इस लिए मुस्लिम को ईमान की दूसरी शर्त तस्दीक बिलकल्ब जो ईमान की जड़ व असल है पाना

आसान है बशर्ते के इस नेअमत को किसी रहबरे कामिल से पाए खुद जुगाली ना करे।

हेच मर्द खुद बखुद शेखे नुशद
हेच आहन खुद बखुद तेग़े नुशद

तर्जुमा : ना कोई लोहा खुद बखुद तलवार बन सकता है ना कोई आदमी खुद बखुद दर्जाए कमाल को पहुँच सकता है। (मौलाना रूम)

तीसरा कल्बे काफिर :

कल्बे काफिर भी दो तरह के होते हैं। एक वह जो नेक आमाल करता है मगर ईमान व इस्लाम की दौलत से महरूम । कुर्आन मजीद इन्ही काफिरों को दावते ईमान देता है। दूसरा वह कल्बे काफिर है जो ईमान व इस्लाम की नेअमत से महरूम भी है और बद आमालियों में भी पूरी तरह घिरा हुआ है। इसका मर्ज़ चौथे दर्जे तक पहँच चुका है जिसका इलाज ना मुम्किन है। इसका कल्ब पूरी तरह से मुर्दार हो चुका है। इनके दिलों पर अल्लाह की मुहर लग चुकी है।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْ اسَوَآءٌ عَلَيْهِمْ ءَاَنْذَرْتَهُمْ اَمْ لَمْ تُنْذِرْ هُمْ لَايُوْمِنُوْنَ. خَتَمَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ.

(सूरह बक़रा – आयत 6–7)

तर्जुमा : बेशक वह जिन की किस्मत में कुफ्र है उन्हें बराबर है चाहे तुम उन्हें डराओ या ना डराओ वह ईमान लाने के नहीं अल्लाह ने उनके दिलों पर मुहर करदी।

यह नेअमते कलमा पाए वही तहरीरे अज़ल में था जिसके
कहलाए वही महबूबे खुदा यह खास है नेअमत आम नहीं
(हज़रत पीर आदिल र.अ.)

हासिले कलाम ः

दिल अल्लाह का फज़ल है जो के हर इन्सान को हिदायत पर रहने और रब को पहचानने के लिए अता किया गया जो ज़ौक व शौक और कश्फ का सरचश्मा है और ईमान के रहने की जगह और इसका बर्तन है जब इस पर ही कुफ्र की मुहर लग गई और कुफ्र से वह इस कदर भर गया के इसमें ईमान की जगह ही ना रही तो अब उनके ईमान की क्या उम्मीद।

याद रखो , जिनके दिलों पर मुहरे नबूवत لَآاِلٰهَ اِلَّااللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ सब्त नहीं है उन्हीं के दिलों पर ختم اللہ علی قلوب بھم रकम कर दी जाती है।

जिन के कल्ब पे मुहरे नबूवत सब्त है मारूफ
यह वह सिक्के हैं जो हर दौर में दरकार होते हैं

लिहाज़ा काबिले एतबार कल्ब - कल्बे मोमिन ही है जिसे अर्श अल्लाह , बैतुल्लाह के ख़िताब से नवाज़ा गया है। कल्बे सलीम , कल्बे शहीद , कल्बे मुनीब , कल्बे मोमिन की ही सिफात का नाम है। अगर मोमिने कामिल किसी मसले में चाहे तो वह अपने दिल से फत्वा ले सकता है।

इर्शादे खुदावंदी है -

لایسعنی ارضی ولاسمائی ولکن یسعنی قلب عبدالمومن.

तर्जुमा ः मेरी गुन्जाइश ना तो मेरी ज़मीन रखती है और ना मेरा आसमान। हां मेरी गुन्जाइश मेरे बन्दाए मोमिन का कल्ब रखता है।

(इस हदीस को इमामे ग़ज़ाली ने अहयाउलउलूम में ज़िक्र किया है और मुहद्दिस देहलवी ने इसे मसनदुल-फिर्दोस में बरिवायत अनस बिन मालिक र.अ. ज़िक्र किया है। हाफिज़ सेवती ने अल-दरूल मुन्तशरा में इस हदीस की तख्रीज की है। मक्तुबात इमामे रब्बानी जिल्द सिऊम मक्तूब **287** में इसको नकल किया है।)

ज़हे किस्मत के अपनी धड़कनों की हम जुबां समझे
हकीकत में वह मोमिन है जो कलमे का बयां समझे
(हज़रत पीर आदिल र.अ.)

कल्बे मोमिन के औसाफ व हालात इस लिए पेश किए गए तांके तुम अपना अपना मुआयना व मुहास्बा कर सको। अगर कल्बी हालात इस बर खिलाफ हैं तो जल्द किसी ज़िंदा दिल पीर की तरफ दौड़ो वक़्त कम और काम ज़्यादा है।

याद रखो, वही बीज फल देता है जो अच्छी ज़मीन में सही वक़्त पर बो दिया जाए ।फिर उसे मुनासिब हवा और पानी मिलता रहे और फिर ज़मीनी व आस्मानी आफात से महफूज़ रहे ,बरसात में छत और दीवारों में बाज़ दाने उग जाते हैं मगर वह फल नहीं दे सकते क्यूँके उनकी ज़मीन दुरूस्त नहीं। इसी तरह कलमाए तय्यबा जब ही फल देगा जब दिल की ज़मीन में बोया जाए, मोहब्बते इलाही का पानी पाए, रहमते इलाही की हवाएँ लगे, मुखालिफते अम्बिया व औलिया की आफात से महफूज़ रहे। बनी इस्राईल का तुख़्मे ईमान सिर्फ जुबान पर उगा जिसका उलटा नतीजा निकला, जिस से वह और ज़्यादा मरदूद हो गए। अगर कलमाए तय्यबा की सही काश्त हो जाए तो ऐसा फल देता के सुब्हान-अल्लाह एक आन में मरदूद को मक़्बूल बना देता है। खताओं को मिटा देता है, रब की अताएँ दिलाता है।

इर्शादे खुदावंदी है ः क्या तुमने ना देखा अल्लाह ने कैसी मिसाल बयान फर्माई कलमाए तय्यबा की जैसे पाकीज़ा दरख़्त जिसकी जड़ क़ायम यानी तहतुस्सरा में और शाखें आस्मानों में हर वक़्त अपना फल देता है अपने रब के हुक्म से। (सूरह इब्राहिम आयत 24-25)

कलमाए तय्यबा की जड़ मोमिन के दिल में है और शाखें आसमानों में। ज़िंदगी व मौत, क़ब्र व हशर, हर जगह फल देता है। इस दरख़्त के साए में आलम आराम करता है। मख़्लूक इस बारदार दरख़्त से फल खाती है यानी फैज़ पाती है।

फ़ज़ाएले कलमए तय्यब

अल्लाह तआला अपने ज़िक्र के ताल्लुक से फरमाता है।
وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ तर्जुमा : और बेशक अल्लाह का ज़िक्र सब से बड़ा है। अपने महबूबे पाक स.अ.व. के ज़िक्र के ताल्लुक से फरमाता है।
وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ तर्जुमा : और हमने तुम्हारे लिए तुम्हारा ज़िक्र बुलंद कर दिया। अल्लाह तआला के ज़िक्र की बुज़ुर्गी और हुज़ूर स.अ.व. के ज़िक्र की बुलंदी को जब रूहानी कीमिया बनाया जाए तो जो नुस्खए अक्सीर तैयार होगा वह अफज़लुज़्जिक्र لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ होगा। لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ अल्लाह तआला का दावा है तो مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ इसकी दलील है। दावा जितना पुर ज़ोर होगा दलील उतनी ही पुर ज़ोर होगी। हज़रत जाबिर र.अ. से मरवी है के रसूल अल्लाह स.अ.व. ने इर्शाद फरमाया तमाम अज़कार में अफज़ल व आला ज़िक्र لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ है। (इब्ने माजा व निसाई)

हज़रत अबू बकर सिद्दीक र.अ. से रिवायत है के रसूल अल्लाह स.अ.व. ने इर्शाद फरमाया के मैं ने जिबरईल से सुना के हक सुब्हानहु तआला ने फरमाया के रूए ज़मीं पर कलमाए तय्यब से आला व अफज़ल कोई कलमा नहीं उतारा। कलमाए तय्यब की बरकत से ज़मीन व आसमान और तमाम आलम की अश्या कायम हैं दर हकीकत यही कलमा अख्लास है, यही कलमा शिफाअत है, यही कलमा बरतर है, यही कलमा बुज़ुर्ग है, यही कलमा मुबारक है, इस कलमे को कुआनि मजीद व हदीसे मुबारका में दीगर मुख़्तलिफ नामों से पुकारा गया। मस्लन कलमाए इस्लाम, कलमाए ईमान, कलमाए निजात, कलमाए तक़्वा, कलमाए तौहीद व रिसालत, कलमाए तौहीद वग़ैरा।

मुल्ला अली क़ारी फरमाते हैं, इस में ज़रा भी शक नहीं के तमाम ज़िक्रों में अफ्ज़ल और सब से बड़ा ज़िक्र कलमाए तय्यब है के यही दीन

की वह बुनियाद है जिस पर सारे दीन की तामीर है। इसी वजह से सूफिया व आरिफीन कराम इस कलमे का अहतेमाम फरमाते हैं। और तमाम अज़्कार पर इस ज़िक्र की तर्जीह देते है और इसकी जितनी मुम्किन हो कसरत कराते हैं के तजुर्बे से इस में जिस क़दर फवायद और मुनाफे मालूम हुए हैं किसी दूसरे में नहीं। हज़रत शेख अब्दुल हक मुहद्दिस देहलवी र.अ. फरमाते हैं के अज़्कार में सब से ज़्यादा तफ्सील वाला ज़िक्रे पाक لَآاِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ है। अगरचा के और अज़्कार बेशुमार हैं। लेकिन बेहतरीन वह है जिस से अल्लाह तआला का ज़िक्रे पाक कामिल व अक्मल होता है।

لَآاِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ कलमाए तौहीद है। ईमान इसके बग़ैर सही हो ही नहीं सकता। इस कलमे को मदा व मत के साथ पढ़ने और हमेशा इसमें मश्गूल रहने से बातिन की तत्हीर व तस्फियाए कल्ब होता है। और वह तमाम असरार व रमूज़ अफ्शा होते हैं जो असरारे इलाहिया कहे जाते हैं। इस कलमाए तय्यब में अजीब तरीन ख्वास और नादिर राज़ पोशिदा हैं। (अश्अतुल-लुम्आत)

अल्लाह तआल कुर्आन मजीद में इर्शाद फरमाता है।

اَلَمْ تَرَ كَيْفَ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا كَلِمَةً طَيِّبَةً كَشَجَرَةٍ طَيِّبَةٍ اَصْلُهَا ثَابِتٌ وَّفَرْعُهَا فِى السَّمَآءِ تُؤْتِىٓ اُكُلَهَا كُلَّ حِيْنٍ بِاِذْنِ رَبِّهَا.

(सूरह इब्राहिम आयत 2425)

तजुमा : क्या तुमने ना देखा अल्लाह ने कैसी मिसाल बयान फरमाई पाकीज़ा बात की जैसे पाकीज़ा दरख़्त जिसकी जड़ क़ायम और शाखें आसमान में हर वक़्त अपना फल देता है अपने रब के हुक्म से।

कलमाए तय्यबा की जड़ मोमिन की ज़मीन में साबित और मज़बूत होती है और इसकी शाखें यानी अमल आसमान में पहुँचते हैं और इसके समरात बरकत व सवाब हर वक़्त हासिल होते हैं।

وَمَثَلُ كَلِمَةٍ خَبِيْثَةٍ كَشَجَرَةٍ خَبِيْثَةِ ِاجْتُثَّتْ مِنْ فَوْقِ الْاَرْضِ مَالَهَامِنْ قَرَارٍ

(सूरह इब्राहिम आयत 26)

तर्जुमा ः गंदी बात की मिसाल जैसे एक गंदा पेड़ के ज़मीन के ऊपर से काट दिया गया अब इसे कोई कयाम नहीं।

क्यूँके कलमाए ख़बीस की जड़ इसकी ज़मीन में साबित व मुस्तहकिम नहीं शाखें इसकी बुलंद नहीं होतीं यही हाल है कुफ़्री कलाम का के इसकी कोई असल साबित नहीं और कोई हुज्जत व बुर्हान नहीं रखता जिस से इस्तेहकाम हो ना इस में कोई खैर व बरकत के वह बुलंदीए कबूल पर पहँच सके।

يُثَبِّتُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِی الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِی الْاٰخِرَةِ.

(सूरहए इब्राहीम आयत 27)

तर्जुमा ः अल्लाह साबित रखता है ईमान वालों को हक बात पर दुनिया की ज़िंदगी में और आखिरत में।

हज़रत अबू कतादा र.अ. फरमाते हैं के दुनिया में कौले साबित से मुराद कलमाए तय्यबा है और आखिरत में कब्र का सवाल व जवाब मुराद है। क्युंके कब्र आख़िरत की पहली मंज़िल है और दुनिया में उनकी हयात का ख़ातमा ईमान पर होगा - لَهٗ دَعْوَةُ الْحَقِّ. तर्जुमा ः इसी का पुकारना सच्चा है। (सूरह रअद आयत 14)

हज़रत अली र.अ. और हज़रत इब्ने अब्बास र.अ. से मन्कूल है के दावतुल-हक से मुराद कलमाए तय्यब की शहादत है।

فَاَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَعَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَ اَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوٰى وَكَانُوْآ اَحَقَّ بِهَا وَاَهْلَهَا. (सूरह अलफतह आयत 26)

तर्जुमा ः पस अल्लाह तआला अपनी सुक्नियत (सुकून व तहम्मुल या ख़ास रहमत) अपने रसूल अल्लाह स.अ.व. पर नाज़िल फर्माई और मोमिनीन पर और उनको कलमाए तक़्वा पर जमाए रखा और वही कलमाए तक़्वा के मुस्तहिक और अहल थे।

हज़रत अली र.अ. हज़रत उमर फारूक र.अ., हज़रत अबू हुरेरा र.अ., हज़रत इब्ने अब्बास र.अ. से हुज़ूर अक़्दस स.अ.व. से यही नक़्ल किया है के कलमाए तक़्वा से मुराद कलमाए तय्यबा है।

وَتَمَّتْ كَلِمَةُ رَبِّكَ صِدْقًا وَّعَدْلًا (सूरह इन्आम -आयत 116)

तर्जुमा ः और तेरे रब का कलमा सदकात और इन्साफ व एतेदाल के ऐतबार से मुकम्मल है।

हज़रत अबू हुरेरा र.अ. से मरवी है, फरमाते हैं ; मैं ने कहा या रसूल अल्लाह स.अ.व. क़यामत के दिन आप की शिफाअत से कौन सब से ज़्यादा बहरामंद होगा ? हुज़ूर स.अ.व. ने इर्शाद फरमाया मैं जानता था के तुम से पहले कोई शख़्स इस मुआमले में मुझसे सवाल ना करेगा। क्युँके मैं हदीस के मालूम करने में तुम को ज़्यादा हरीस पाता हूँ। मेरी शिफाअत से बरोज़े क़यामत वह शख़्स सब से ज़्यादा बेहरामंद होगा जो खुलूसे दिल से अपनी हर साँस में لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ का ज़िक्र करता हो। (बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ)

हज़रत अनस र.अ. से रिवायत है के हुज़ूर करीम स.अ.व. ने फरमाया क़यामत के दिन अल्लाह तआला का फर्मान होगा जहन्नुम से हर उस शख़्स को निकाल लो जिस ने कलमाए तय्यबा कहा हो और इस के दिल में ज़र्रा बराबर भी ईमान हो। (हाकिम)

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास र.अ. फरमाते हैं के ऐ लोगो لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ का कसरत से विर्द करने वालों पर मौत के वक़्त कोई घबराहट ना होगी। ना उन लोगों को अपनी कब्र में किसी किस्म की कोई वहशत होगी। ना हशर के दिन उनको किसी तरह की बेचैनी होगी। गोया के मुझे उस वक़्त का वह मन्ज़र नज़र आ

रहा है के لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ पढ़ने वाले अपनी कब्रों से उठ रहे हैं और अपने सरों से खाक झाड़ रहे हैं और यह कह रहे हैं के बेहद शुक्र व अहसान है उस खुदाए तआला का जिस ने तमाम तक्लीफें और आफतें हम से दूर फर्मा दीं और कोई रंज व ग़म हमारे पास ना फटका। (तिब्रानी - बहिकी र.अ.)

हज़रत अबू हुरेरा र.अ. से रिवायत है हुज़ूर स.अ.व. ने इर्शाद फरमाया لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ की कसरत से गवाही देते रहा करो इस से पहले के ऐसा वक़्त आए के तुम इस कलमे को ना कह सको। (अबुलऐली)

हुज़ूर स.अ.व. ने इर्शाद फरमाया जिस का आख़री कलाम لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ हो तो उसको जन्नत में दाखिल कर दिया जाएगा। एक और हदीस में है रसूल अल्लाह स.अ.व. ने फरमाया जो कोई बंदा لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ का खुलूसे कल्ब से कौ़ल करे और फिर इसी हाल पर मर जाए तो यह नहीं हो सकता के वह जन्नत में ना जाए।

(बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ)

हुज़ुर नबीए करीम स.अ.व. ने एक दफा हज़रत अबू हुरेरा र.अ. से इर्शाद फरमाया के जाओ और जो ऐसा आदमी मिले जो यकीने कल्ब के साथ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ की गवाही देता हो उसको मेरी तरफ से जन्नत की बशारत सुना दो। (मुस्लिम शरीफ)

हज़रत उसमान ग़नी से रिवायत है के नबीए करीम स.अ.व. ने फरमाया जो कोई इस हाल में दुनिया से गया के वह لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ पर यकीन व एतक़ाद रखता था तो वह जन्नत में जाएगा। (मुस्लिम शरीफ)

हज़रत अबू तल्हा र.अ. ने फरमाया जिस ने कलमाए तय्यबा की तस्दीक की जन्नत में दाखिल होगा। (हाकिम)

इमामे रब्बानी मुजद्दिदे अल्फे सानी शेख अहमद सर्हन्दी र.अ. फरमाते हैं कोताह नज़र लोग तआज्जुब करते हैं के सिर्फ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ कहने से दाख़िले जन्नत कैसे मयस्सर आएगा। यह लोग इस कलमाए तय्यबा की बरकात से वाकिफ नहीं । इस हकीर को मख़्सूस हुआ है के अगर तमाम आलम को सिर्फ इस कलमाए तय्यबा के तुफेल बख़्श दें और बहिश्त में भेज दें तो गुंजाइश रखता है और मुशाहिदे में इस तराह आता है के अगर इस कलमाए मुकद्दसा की बरकात को हमेशा हमेशा के लिए तमाम आलम पर तक़्सीम करते रहें । सब को किफायत करता और सब को सैराब करता है। तो इस कलमाए तय्यबा की बरकात किस कदर बढ़ जाती हैं।जब के इस के साथ कलमाए मुकद्दसा مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ झमा हो जाए और तबलीग़ तौहीद के साथ मिल जाए और रिसालत विलायत की साथी बन जाए । इन दो कलमों का मज्मूआ विलायत व नबूवत के कमालात का जामा है और इन दो सआदतों का पेशवाए राह है। यही कलमा है जो जुल्मात ज़लाल से पाक करता और नबूवत को दर्जए उल्या तक पहुँचाता है।

ऐ अल्लाह ! हमें कलमाए तय्यबा की बरकात से महरूम ना कर और हमें इस पर साबित रख और हमें इसकी तस्दीक पर मौत नसीब फरमा और इसकी तस्दीक करने वालों के साथ हमारा हश्र फरमा और हमें इसकी हुर्मत और इसकी तबलीग़ करने अम्बिया अलैह सलात व तस्लीमात वत्तहियात व बरकात की हुर्मत से जन्नत में जाना नसीब फरमा। आमीन ।

(मक्तूबाते इमामे रब्बानी जिल्द सिऊम - मक्तूब **37** सफहा **1042**)

हुजूर स.अ.व. फरमाते हैं ثَمَنُ الْجَنَّةِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ यानी के जन्नत की कीमत कलमाए तय्यब لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ का इक़रार व तस्दीक है।

हज़रत माज़ बिन जबल र.अ.से रिवायत है के हुजूर स.अ.व. ने फरमाया कलमाए तय्यब की शहादत जन्नत की कुंजियां हैं।

(मस्नद इमाम अहमद)

हज़रत वहब बिन मुंबा र.अ.से पूछा गया के तुम्हारे लिए कलमाए तय्यब जन्नत की कुंजी नहीं? कहा ज़रूर है लेकिन हर कुंजी के लिए दंदाने होते हैं। पस लाए तो दंदाने वाली कुंजी को खोला जाएगा तेरे लिए अगर ना लाए ऐसी कुंजी ना खोला जाएगा तेरे लिए। दंदानों से मुराद यहाँ इक़रारे बिल्लिसान और तस्दीके बिल कल्ब है।

(बुख़ारी शरीफ)

राज़दारे हुजूर अकरम स.अ.व. हज़रत हुज़ैफा र.अ.से रिवायत है हुजूर स.अ.व. का इर्शाद है के एक ज़माना ऐसा आने वाला है के इस्लाम ऐसा धुंधला रह जाएगा जैसे कपड़े के नक़श व निगार पुराने होने से धुंधले हो जाते हैं। कोई रोज़े को जानेगा ना हज को ना ज़कात को। आखिर एक रात ऐसी होगी के कुर्आनि करीम भी उठा लिया जाएगा। कोई आयत इसकी बाकी ना रहेगी (उस वक़्त के) बूढ़े मर्द और बूढ़ी औरतें यह कहेंगी के हमने अपने बुर्जुगों को कलमा لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ पढ़ते सुना था हम भी इसी को पढ़ेंगे। हज़रत हुज़ैफा र.अ. के एक शागिर्द सुला र.अ. ने अर्ज़ किया ,जब ज़कात , हज, रोज़ा वग़ैरा कोई रूक्न ना होगा तो यह कलमा क्या काम देगा? हज़रत हुज़ैफा र.अ. ने सुकूत फरमाया। सुला र.अ. ने फिर असरार किया के जब इस्लाम का कोई रूक्न ना होगा तो सिर्फ कलमा पढ़ लेने से क्या होगा? तीसरी मर्तबा हज़रत हुज़ैफा र.अ. ने फरमाया ; जहन्नुम से निकालेगा। जहन्नुम से निकालेगा। जहन्नुम से निकालेगा। यानी अर्कानि इस्लाम अदा ना करने के बावजूद किसी ना किसी वक़्त इस कलमाए निजात की बरकत से निजात मिलेगी।

तौहीद के चार दर्जे

सूफियाए कराम के नज़दीक अज़रूए शरिअत व तरीकत व हकीकत व मआरिफत इज्मालन तौहीद के चार दर्जे हैं और हर दर्जे में मुख़्तलिफ हालत अहले तौहीद की हुआ करती है।

तौहीद का पहला दर्जा ः

तौहीद का पहला दर्जा यह है के एक गिरोह फकत जुबान से لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه कहता है मगर दिल से रिसालत व तौहीदे हक का मुन्किर है। ऐसे लोग जुबाने शरआ में मुनाफिक कहे जाते हैं। यह तौहीद मरने के वक़्त या कयामत के दिन कुछ फायदा बख़्श ना होगी। सरासर वबाल और निकाले आखिरत का बाइस होगी। खुदा मेहफूज़ रखे।

तौहीद का दूसरा दर्जा ः

तौहीद के दूसरे दर्जे की दो शाखें हैं। एक जुबान से لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه कहता है और तक़्लीदन एतेकाद रखता है के अल्लाह एक ही है कोई इसका शरीक नहीं। जैसा के माँ बाप वग़ैरा से इसने सुना है। इस जमात के लोग आम मुसल्मानों में हैं। दूसरा गिरोह لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه कहता है और एतेकाद सही रखता है। अलावा इसके इल्म की वजह से अल्लाह तआला की वहदानियत पर सैकड़ों दलीलें भी रखता है। इस जमात के लोग मुत्कलमैन यानी उल्माए ज़वाहिर कहलाते हैं। आम मुसल्मान व मुत्कलमैन यानी उल्माए ज़ाहिर की तौहीद वह तौहीद है के शिर्के जली से निजात पाना, दोज़ख से रिहाई, बहिश्त में दाखिल होना इसका समरा है। अलबत्ता इस तौहीद में मुशाहेदा नहीं है इस लिए अब्राबे तरीकत के नज़दीक इस तौहीद से तरक़्की ना करना अदना दर्जे पर किनाअत करना है।

तौहीद का तीसरा दर्जा ः

मोहिदे मोमिन बाइत्तेबाए पीरे तरीकत मुजाहिदा व रियाज़त में मश्गूल हैं। रफ्ता रफ्ता यह तरक्की इसने की है के नूरे बसीरत दिल में पैदा हो गया है। इस नूर से उसको मुशाहेदा है के फाइले हकीकी वही एक ज़ात है।

सारा आलम गोया कठ पुतली की तरह है। किसी को कोई इख्तियार नहीं। ऐसा मोहिद किसी फेल की निस्बत किसी दूसरी तरफ नहीं कर सकता। क्यूँके वह देख रहा है के फाइले हकीकी के सिवा दूसरे का फेल नहीं है।

दरीने नु हम शिर्क पोशिदा अस्त
के ज़ीदम बयाज़ रद व उमरम बकश्त

(यानी इस में भी शिर्क छुपा हुआ है के अगर कोई कहे के मुझको ज़ैद ने सताया और उमरू ने मार डाला।)

अब हम एक मिसाल देते हैं इस से तौहीदे आमियाना , तौहिदे मुत्कलिमाना और तौहीदे आरिफाना सभों के मरातिब का फर्क साफ साफ ज़ाहिर हो जाएगा।

मिसाल ः किसी सराए में एक सौदागर उतरा। उसकी शोहरत हुई। लोग उसका माल व अस्बाब देखने को चले और मुलाकात के ख़्वाहाँ हुए। एक शख़्स ने ज़ैद से पूछा , भई तुम कुछ जानते हो फलां सौदागर आया है, उसने कहा हाँ सही खबर है। क्यूँके मोअतेबर ज़राए से मुझे मालूम हुआ है। यह "तौहीदे आमियाना" की मिसाल है। दूसरे ने उमरू से दर्याफ्त किया, आप को उस सौदागर का हाल मालूम है। उमरू ने कहा ।खुब अभी अभी मैं उसी तरफ से आ रहा हूँ। सौदागर से मुलाकात तो ना हुई , मगर उसके नौकरों को देखा , उसके घोड़े देखे , अस्बाब वग़ैरा देखने में आए। ज़रा शुबा उसके आने में नहीं है। यह "तौहीदे मुत्कलिमाना" है। तीसरे शख़्स ने ख़ालिद से इस्तफसार किया ।जनाब इसकी ख़बर रखते हैं

के सौदागर साहब सराए में तशरीफ रखते हैं। ख़ालिद ने जवाब दिया। बेशक मैं तो अभी अभी उन्हीं के पास से आ रहा हूँ। मुझसे अच्छी तरह मुलाकात हो गई है। यह "तौहीदे आरिफाना" है।

देखो ज़ैद ने सुनी सुनाई पर एतेक़ाद किया। उमरू ने माल व अस्बाब वग़ैरा देख कर दलील क़ायम की। ख़ालिद ने खुद सौदागर को देख कर यकीन किया। तीनों में जो फर्क मुरातिब है इसके बयान की अब हाजत ना रही। अहले तरीकत के नज़दीक जिस तौहीद में मुशाहेदा ना हो वह तौहीद की सूरत और तौहीद का क़ालिब है। मुशाहदे से एतेक़ाद को कोई निस्बत नहीं। क्यूँके एतेक़ाद दिल को ख़्वामख़्वाह एक चीज़ का पाबंद कर लेता है और मुशाहेदा हर बंद को खोल देता है और मुशाहदे से इस्तदलाल को भी कोई मुनासिबत नहीं क्यूँके

पाए इस्तदलालियान चौंबे बूद
पाए चौबेन सख़्त बे तम्कीन बूद

(यानी दलीलें लाने वालों का पाँव लकड़ी का बना होता है। और लकड़ी का पाँव देर तक कायम नहीं रह सकता।)

तौहीद का चौथा दर्जा ः

कसरते अज़्कार व अशग़ाल व रियाज़त व मुजाहदा के बाद तरक़्क़ी करते करते यहाँ तक सालिक तरक़्क़ी करता है के बाज़ बाज़ वक़्त शश जहत में अल्लाह तआला के सिवा उसको कुछ नज़र नहीं आता। तजल्लियाते सिफाती का ज़हूर इस शिद्दत से सालिक के दिल पर होता है के सारी हस्तियाँ उसकी नज़र में गुम हो जाती हैं। जिस तरह ज़र्रे आफताब की फैली हुई रौशनी में नज़र नहीं आते।

इस मुक़ामे तफ्रीद में पहुँच कर हक़ीक़ते वहदतुलवजूद इस तरह मुन्कशिफ होती है के सलिक महू हो जाता है। तजल्लीए ज़ाती कुल क़िस्सो को तए कर देती है। इस्म व रस्म, वजूद व अदम, इबारत व

इशारत , अर्श व फर्श , असर व ख़बर , इस आलम और इस दयार में कुछ ना पाओगे। كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ (यानी यहाँ हर चीज़ को फना है) इस मुकाम के सिवा और कहीं जलवागर नहीं होता। كُلُّ شَيْءٍ هَالِكٌ إِلَّا وَجْهَهُ (यानी हर चीज़ मिट जाने वाली है मगर उसकी ज़ात) उस जगह के सिवा और कहीं सूरत नहीं दिखाता।

أَنَا الْحَقُّ وَسُبْحَانِيْ مَا اَعْظَمَ شَانِيْ (यानी पाक हूँ और मेरी शान बहुत बड़ी है) यहाँ के सिवा और कहीं उसका निशान नज़र ज़ाहिर नहीं होता। तौहीद बेशिर्क मल्लक़ जो तुमने सुना है, वह इस दारूल–मुल्क के सिवा और कहीं ना देखने पाओगे।

तौहीदे वजूदी इल्म के दर्जे में हो या शहूद के इब्तेदाई दर्जे से इन्तेहाई दर्जे तक पहुँचे , हर मर्तबा बंदा बंदा है खुदा खुदा है। इसी लिए "अनल हक्कू व सुब्हानी मा अज़मे शानी" वग़ैरा कहना अगर सदके हाल ना हो तो खुद अहले तरीकत के नज़दीक यह कलमात कुफ्रिया हैं और जहाँ सदके हाल है बेशक वहाँ कमाल ईमान की दलील है।

अब तुम चारों दर्जो की तौहीद में जो फर्क है वह इस मिसाल से समझ सकते हो। अखरोट में दो किस्म के पोस्त और एक किस्म का मग़ज़ होता है। फिर मग़ज़ में रोग़न है।

1) मुनाफिकों की तौहीद पहले छिल्के के दर्जे में है क्यूँके वह छिल्का किसी काम में नहीं आता सिवाए जलाने के। यह " मुनाफिकाना ईमान " है।
2) आम मुसल्मानों और मुत्कलिमों की तौहीद दूसरे छिल्के के दर्जे में है यह कुछ कारआमद होता है। यह " तक़्लीदी ईमान " है।
3) आरिफाना तौहीद मग़ज़ के दर्जे में है। इसका फायदा और इसकी खूबी जाहिर है। यह " तहकीकी ईमान " है।
4) मोहिदाना तौहीद रोग़न के दर्जे में है। इसकी तारीफ की हाजत नहीं " हकीकी ईमान " है। हकीकी ईमान ही विलायत है। देखो अखरोट तो पूरे मज्मूए को कहते हैं इसी तरह तौहीद तो हर तौहीद को कहते हैं मगर दर्जात, समरात, क़ायदे, ज़ाब्ते में तफाउत हज़रो हज़ार हैं।

कलमए तय्यब में दो कुफ्र चार शिर्क

ईमान ःका माना शक का कुल्ली तौर पर ज़ाएल होना है। शक उसी वक़्त रफा होगा जब यक़ीन का नूर दिल की तस्दीक से मुनव्वर होगा। लिहाज़ा कलमाए तय्यब का खुलासा किसी साहबे दिल से हासिल कर जो दो कुफ्र चार शिर्क की आलूदगी को निकाल कर बुत खानाए दिल को तौहीद का काबा बना दे। यहाँ दो कुफ्र चार शिर्क पर मुख्तसर नज़र डाली जाएगी। मज़ीद तफ्सील अपने रहबरे कामिल की रौश्नी में पाओ।

दर कलमा कुफ्र दो शिर्क सत चहार
अज़ तुफेले मुर्शिद कामिल बर आर
(मौलाना रूम साहब)

कुफ्र है मौजूद को करना निहां
शिर्क है मआदूम को करना अयां
(सूफी)

कुफ्रे अव्वल

अज़्रूए शरियत ः

لَا اِلٰهَ कलमाए नफी है। ग़ैर اِلٰهَ को मआबूदे हकीकी मनना कुफ्र है। اَفَرَاَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ اِلٰهَهٗ هَوَاهُ तर्जुमा ः क्या तुमने उसको देखा जिसने अपनी ख़्वाहिशाते नफ्स को अपना मआबूद बना लिया है।

नफ्से इन्सानी में हर ख़्वाहिश एक बुत के मानिन्द है। ग़र्ज़ नफ्से इन्सानी में तीन सौ साठ ख़्वाहिशात, तीन सौ साठ बुत मौजूद हैं। जिनमें

से पाँच बुत (1) हुब्बल (2) लात (3) मुनात (4) उज़्ज़ा (5) तागूत, बड़े और कवी हैं। जिनकी नफी के बग़ैर ईमान नाकिस और नफ्स नापाक रहता है।

ग़ैर اِلٰہ की नफी का तरीका पीरे कामिल से पाएँ बग़ैर बिला फहम हकीकत لَآ اِلٰہَ गर कहे तो कुफ्र है।

अज़्रूए तरीकत व हकीकत ः

खुद को ज़ाहिर करना और हक को निहां करना, ग़फ्लत दूई व कसरत में रहना ही कुफ्रे मिजाज़ी है।

وَاِنَّ فَرِيۡقًا مِّنۡهُمۡ لَيَكۡتُمُوۡنَ الۡحَقَّ وَهُمۡ يَعۡلَمُوۡنَ.

तर्जुमा ः और बेशक उन में एक गिरोह जान बूझकर हक को छुपाते हैं।
(सूरहए बक़्रा - आयत 146)

وَلَا تَلۡبِسُو ا الۡحَقَّ بِالۡبَاطِلِ وَ تَكۡتُمُو ا الۡحَقَّ وَ اَنۡتُمۡ تَعۡلَمُوۡنَ

टर्जुमा ः और हक से बातिल ना मिलाओ और दीदा व दानिस्ता हक ना छुपाओ। (सूरह बक़्रा - आयत 42)

तहकीक से कर कलमे का यकीं
है कौन यहाँ और कौन नहीं

"لَا" कलमाए नफी है। यह नफी किस की है? यह मआबूदे ग़ैरे हकीकी की नफी है। क्यूँके जो मौजूद बिलज़ात नहीं वह हक नहीं और जो हक नहीं वह मआबूद नहीं। इस लिए ग़ैरे हक की नफी शर्ते तौहीद है। इस बिलमुकाबिल ग़ैरियत जो बेएतेबारी और वहम व ख़याल है।

वाकिफे अस्रारे ख़फी व जली हज़रत सय्यद इफ्तेखार अली

साहब किब्ला अलैह रहमा फरमाते हैं के इन्सान को अल्लाह तआला ने दो सिफत से पैदा किया है। एक हैवानी दूसरी मल्की, इब्तेदा में वस्फे हैवानी का ग़ल्बा रहता है इस लिए भूला हुआ रहता है। जब शरियत व तरीकत के इल्म से वाकिफ होगा तो इबादत व रियाज़त से और मुजाहदे के ज़रिए वह भूल रफा होगी तो समझ पैदा होगी के मैं नहीं हूँ हक है।

(इरफाने वतन)

हस्तिए हक में कर अपना वतन
मैं पना कर हक के मैं पन में दफन

ताबा जारूब " لا " बा रूबी राह के रस्सी दर मुकामे " إِلَّا الله " (जब तक " لا " की झाडू से रास्ता साफ ना करोगे " إِلَّا الله " की बारगाह में नहीं पहुँच सकते।)

शेखुलमशाएख़ हज़रत शेख शर्फुद्दीन यहिया मुनेरी र.अ. फरमाते हैं के मुकामे तौहीद के मुआमलात बहुत नाजुक हैं। जिस वक़्त मुरीद की चश्मे बातिन पर आलमे तौहीद मुन्कशिफ होता है आलमे इजाद के कुल मौजूदात इस को ग़ैर नज़र आते हैं। उस वक़्त ग़ैर की नफी को वह शर्ते तौहीद समझता है। आखिर आतिशे ग़ैरियत लहक उठती है और मासिवा अल्लाह को जला कर खाक सियाह कर देती है।

(मक्तूबात सदी सफहा282)

हज़रत ख़्वाजा नक़्शबंदी कुदसल्लाहु तआला सिर्रहुल कुद्दूस फरमाते हैं, जो कुछ देखा, या सुना, या जाना गया है वह खुदाए तआला का ग़ैर है। कलमाए " لا " की हकीकत से इसकी नफी करनी चाहिए।

(मक्तूबाते इमामे रब्बानी जिल्द अव्वल सफहा 113)

इमामे रब्बानी मुजद्दिदे अल्फे सानी शेख़ अहमद सरहंदी र.अ. फरमाते हैं। لَيْسَ كَمِثْلِهٖ شَيْءٌ इस की मिस्ल कोई शए नहीं। यानी

बेमिस्ल बेकैफ है। इल्मे शहूद व मआरिफत को ज़ाते सुब्हानहू की तरफ रास्ता नहीं मिल सकता जो कुछ लोग देखते हैं या जानते हैं या पहचानते हैं सब इस ज़ाते मुकद्दसा का ग़ैर है। इसमें गिरफ्तारी ग़ैर में गिरफ्तारी है। लिहाज़ा इसकी नफी करना लाज़मी है।

(मक्तुबाते इमामे रब्बानी जिल्द अव्वल सफहा 128)

सिर्फ के " لَا " का समझना ही जो मुश्किल होगा
खैसे कह दूँ के हर पीर भी कामिल होगा

(हज़रत पीर आदिल र.अ.)

कुफ्रे दुव्वम

अज़्रूए शरिअत ः

اِلَّا اللّٰہُ कलमाए अस्बात है। मआबूदे हकीकी की नफी कुफ्र है।

अज़्रूए तरीकत व हकीकत ः

हक को ज़ाहिर करना और खुद को निहाँ करना कुफ्रे हक है।

وَ يَعْلَمُوْنَ اَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ الْمُبِيْنُ. (सूरहए नूर आयत 25)
तर्जुमा ः और जान लेंगे के अल्लाह ही सरीह हक है।

اِلَّا اللّٰہُ सौ अस्बात है
मुझ में नज़र आती सो अल्लाह की ज़ात है

यही कुफ्र ; कुफ्रे हकीकी है जिस के माने दुई के बिलकुल दूर हो जाने और कसरत के कुल्ली तौर पर छुप जाने के हैं जो के मुकामे फना है।

इमामे रब्बानी मुजद्दिदे अल्फे सानी हज़रत शेख अहमद सरहंदी र.अ. जिसके मुताल्लिक फरमाते हैं। यह तरीकत का कुफ्र शरिअत के कुफ्र से पूरी तरह मुनासिबत रखता है। अगरचा शरिअत का काफिर 'मरदूद' है और सज़ा का मुस्तहिक है और तरीकत का काफिर 'मक़्बूल' है और दर्जात का मुस्तहिक है। क्यूँके यह कुफ्र और पोशीदगी मेहबूबे हकीकी की मुहब्बत के ग़ल्बे की वजह से पैदा हुई है। इसने मेहबूब के सिवा सब को फरामोश कर दिया है। पस वह मक़्बूल होता है। और शरिअत का कुफ्र जहालत और सरकशी से पैदा होता है तो वह लाज़मन मरदूद है।

(मक्तुबाते इमामे रब्बानी जिल्द दुव्वम सफहा 122)

एक और जगह फरमाते हैं। सब इसी जमआ (पोशीदगी का वतन) के दरख़्त के फल हैं के इनका सबब मेहबूबे हकीकी की मुहब्बत का ग़ल्बा है। यह मेहबूब के अलावा हर चीज़ इनकी नज़र से पोशीदा हो चुकी है और मेहबूब के अलावा कोई चीज़ मश्हूद नहीं रही। और यह मुकामे ' जहालत ' और ' हैरत ' का है। लेकिन यह वह जहालत है जो " मेहमूद " है और यह वह हैरत है जो " ममदूह " है।

(मक्तुबाते इमामे रब्बानी जिल्द दुव्वम सफहा 1355)

इसकी मिसाल ऐसी है के कोई इन्सान नमक की खान में डाल दिया जाए। यहाँ तक के वह आहिस्ता आहिस्ता ऐसी चीज़ बन जाए जो नमक के अहकाम से रंगी जाए। यहाँ तक के वह पूरी तराह नमक हो जाए। इस में कोई चीज़ अपनी ना रहे, ना ज़ात ना सिफात। तो लाज़मन इसका कत्ल करना भी जाएज़ होगा और काटना भी और इसका खाना भी जाएज़ होगा और इसकी ख़रीद व फरोख़्त भी मुबा होगी। एक मख़्लूक में जब यह सिफत है के दूसरी मख़्लूक को अपना हम रंग बनाए तो सुल्ताने हकीकत में यह असल और यह कुव्वत क्यूँ ना होगी के हालते इस्तेग़राक में सालिक को ऐसे मुशाहदे की दौलत से मुशर्रफ करे के सिफाते बशरियत

इस से ज़ाएल हो जाए और आलमे मलकूत में पहुँच जाए, फिर मुकामे मलकी से भी इसको आगे बढ़ा दे यहाँ तक के अज़्रूए सिफात वह नेस्त हो जाएं, तजल्लिए ज़ाती का इस पर तसर्रूफ होने लगे, इसकी बोली कलामे हक, इसकी समाअत समाअते हक हो जाए वह सिर्फ दर्मियान में एक बहाना मालूम हो।

मशाएखे उज़्ज़ाम में से जिसने भी बज़ाहिर शरिअत के मुख़ालिफ बातें कहीं हैं वह सब कुफ्रे तरीकत के मुकाम में थे। जो के सकर व आलमे मस्ती का मुकाम है। यह वह कुफ्र है जिसकी ख़बर मनसूर हल्लाज ने दी और इसी कुफ्र में रहे और इसी में उनकी मौत हुई।

كَفَـرْتُ بِـدِيْـنِ اللهِ وَالْكُفْرُ وَاجِبٌ
لَدَىَّ وَعِنْدَ الْمُسْـلِمِيْنَ قَبِيْحُ

तर्जुमा : मैं ने अल्लाह के दीन का कुफ्र किया और कुफ्र मेरे नज़दीक वाजिब है और मुसल्मानों के नज़दीक बुरा है।

हज़तर मनसूर हल्लाज र.अ.

انا الحق मैं खुदा हूँ

हज़रत ख़्वाजा जुनैद बग़दादी र.अ.

لَيْسَ فِىْ جُبَّتِىْ اِلَّا اللّٰه नहीं मेरे जुब्बे में मगर अल्लाह

हज़रत बायज़ीद बुस्तामी र.अ.

سُبْحَانِى مَا اَعْظَمِ شَانِى मेरी शान पाक और अज़ीम है

हज़तर अबू बकर शिब्ली र.अ.

انا اقول انا اسمع وهل فی الدارین غیری

मैं ही कहता हूँ मैं ही सुनता हूँ
भला मेरे सिवा कौन है दो जहाँ में

اِنْ صَلَّيْتُ اَشْرَكْتُ وَ اِنْ لَمْ اُصَلِّ كَفَرْتُ

अगर मैंने नमाज़ पढ़ी तो शिर्क
किया और ना पढ़ी तो कुफ्र किया

हज़रत शेख शर्फुद्दीन यहिया मुनेरी र.अ.

जब तक काफिर ना हो मुसल्मान
नहीं होता

हज़रत सय्यद इफ्तेख़ार अली वतन र.अ.

जल्वाए हक सूरते बुत में नुमांया हो गया
था जो ईमां कुफ्र ठहरा कुफ्र ईमां हो गया

मानी लफ्ज़े "अनल हक" को ना पूछ मुझ से
ढूँडता हूँ जो उसे आप को मैं पाता हूँ

हज़रत पीर आदिल बिजापूरी र.अ. फरमाते हैं।

इश्क के दरिया में डूबा अब जो होना हो सो हो
इश्क काफिर हम भी काफिर जब जो होना हो सो हो

तंबिया ः वह शख़्स जो कैफ व सुरूर व आलमे मस्ती में गुफ्तगू करे और सब के साथ सुलह के मुकाम में हो और सबको सिराते मुस्तकीम पर समझे और ख़ालिक और मख़्लूक में तमीज़ साबित ना करे और इन में दुई का काएल ना हो, अगर ऐसा शख़्स मुकामे जमा में पहुँचा हुआ है और कुफ्रे तरीकत से मुत्तहकीक हो चुका है और मासिवा को बिलकुल भूल चुका है

तो वह मक़्बूल है और उसकी बातें सकर व मस्ती से पैदा हुई हैं और उनका ज़ाहिरी मतलब नहीं लिया जाएगा और अगर वह शख़्स इस हाल के हुसूल के बग़ैर और कमाल के पहले दर्जे में पहुँचे बग़ैर इस तरह की बातें करता है और सब को हक पर और सिराते मुस्तकीम पर जानता है और हक और बातिल में तमीज़ नहीं करता तो वह ज़िंदीक और मुल्हिद है।

शिर्के अव्वल

शिर्के जली शिर्के फिल-अस्मा

शरिअत में हर चीज़ की इब्तेदा व इन्तेहा , फना व बका बाइस्मे अल्लाह से है। इस्म वह है जो ज़ात पर दलालत करे। इल्मे नहू के एतेबार से इस्म किसी फेल का मोहताज नहीं बल्के फेल इस्म का हाजत मंद है। इस लिए अज़रूए शरिअत ग़ैर इस्मे अल्लाह को पुकारना या ग़ैर इस्मे अल्लाह को याद करना शिर्के जली है।

अज़रूए तरीकत व हकीकत ः

ज़हूरे हज़दा हज़ार मौजूदात आलमे असमा इलाही के जल्वे हैं क्यूँके मौजूद बिल-ज़ात सिर्फ ज़ाते हक है। अल्लाह का हर इस्म अपना मुसम्मा व मज़हर चाहता है चूँके असमा बग़ैर मुज़ाहिर बेअसर रहते हैं। जैसा के इमामे रब्बानी मुजद्दीदे अल्फे सानी शेख़ अहमद सरहंदी र.अ. फरमाते हैं। अल्लाह था और कोई चीज़ उसके साथ ना थी और जब उसने चाहा के अपने पोशीदा कमालात को ज़ाहिर करे तो अल्लाह तआला अपने कमाले कुदरत से आलमे अदम में अपने अस्मा में से हर इस्म के लिए मुज़ाहिर में से एक मज़हर मुताय्युन फरमाया और उसको मर्तबा हिस्स व वहम में जब चाहा जिस तरीके पर चाहा पैदा किया।

(मक्तूबाते इमामे रब्बानी जिल्द दुव्वम सफहा - 1414)

इसकी मिसाल तेज़ी से गर्दिश करने वाले नुक़्ता और दायराए मोहुमा की सी है। मौजूद तो सिर्फ वही नुक़्ता है और दायरा ख़ारिज में मआदूम है। वह ख़ारिज में कोई नाम व निशान नहीं रखता लेकिन इसके बावजूद इस दायरे ने मर्तबाए हिस्स व वहम में सबूत पैदा किया है और इसी मर्तबा में बतरीक़ जुल्लियत इसको चमक व दमक हासिल है। इसी लिए सूफियाए कराम की नज़र में जिसने जुम्लाए ज़र्रात आलिमे उल्वी व सिफ्ली ग़ैब व शहादत को मज़हर अस्माए इलाहिया से अलग समझा या देखा उसने दुई को लाज़िम किया फिर तौहीद कहाँ रही, शिर्क लाज़िम हुआ। जो दो को मौजूद जाना पस मुश्रिक हुआ। इस लिए इस्म से मुसम्मा की पैरवी करे।

हज़रत सय्यद इफ्तेख़ार अली वतन साहब किब्ला र.अ. फरमाते हैं। जब सालिक की नज़र से अस्मा व ताय्युनात का पर्दा उठ जाए तो फिर इसको बहरे उलहुवियत के सिवाए दूसरा नज़र नहीं आता। हर मौजूद को ज़हूरे ज़ात का समझता है और जब तौहीद का ग़ल्बा होता है तो दुई की बू तक आने नहीं देता। इस लिए बंदा भी ज़ात का एक ज़हूर है जैसा के हुबाबे दरिया है। अगर हुबाब को हकीकत दरिया कहा जाए तो क्या नुक्सान है। बशर्त इस्म व ताय्यून का पर्दा उठा कर कहे तो ऐन इर्फान है।

मुकामे वस्ल में सोचो तो अल्लाह है ना बंदा है
फकत एक नाम की है कैद कतरा है ना दरिया है

हदीसे पाक ः

एक रोज़ सरकारे दो आलम स.अ.व. से मुश्रिकों ने सवाल किया के हम लोग अपने साथ एक एक अल्लाह मुतफरिक रखते हैं जिसको आप बुत कहते हैं और आप एक अल्लाह कहते हैं। एक क्युँकर

होगा? हुज़ूर स.अ.व. ने इर्शाद फरमाया के हम तमाम की हकीकत को एक जान कर एक देख कर एक "अल्लाह" कहते हैं।

जब तू मिटेगा तो होगा ग़रीके यम विसाल
रखकर खुदी खुदा को पुकारा तो क्या हुआ

जब दो सिरा में दूसरा मौजूद ही नहीं
बुत को अगर खुदा पुकारा तो क्या हुआ

शिर्के दुव्वम

शिर्के ख़फी शिर्के फिल-अफआल

अज़्रूए शरिअत ः

हक तआला ख़ैर व शर का इरादा करने वाला और इन दोनों का पैदा करने वाला है लेकिन ख़ैर से राज़ी है मगर शर से राज़ी नहीं। अफआल का पैदा करना हक तआला की तरफ मन्सूब है और इन अफआल का कसब बंदों की जानिब मन्सूब है।

अज़्रूए तरीकत व हकीकत ः

हक तआला ही फाइले हकीकी है।
يَفْعَلُ اللّٰهُ مَا يَشَاءُ وَيَحْكُمُ مَا يُرِيْدُ तर्जुमा ः अल्लाह तआला जो चाहता है करता है और जो चाहे फैसला करता है।
لَا يُسْئَلُ عَمَّا يَفْعَلُ तर्जुमा ः जो वह करता है इस से कोई नहीं पूछ सकता। وَلَا تَتَحَرَّكُ ذَرَّةٌ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ तर्जुमा ः बग़ैर हुक्मे इलाही एक ज़र्रा भी जुम्बिश नहीं कर सकता।
كُلَّ يَوْمٍ هُوَ فِىْ شَاْنٍ तर्जुमा ः हर वक़्त वह एक नई शान में है।

ख़ालिके अफआल का है सब असर फाइले मत्लक वही है सर बा सर

शिर्क है करना तवज्जा ग़ैर पर है यही शिर्के ख़फी ऐ बा हुनर

तरीक़त व हकीकत में अपने इख़्तियार से और तमाम आलम के इख़्तियार से बाहर आना है और इस से ग़र्ज़ यह है के ऐसे तमाम हरकात व अफआल के जिनको वह इस से पहले अपने और दूसरों की तरफ मन्सूब करता था उन सब को वह हक की तरफ निस्बत करे और सब को हक तआला की तरफ से जाने और अपने तमाम अफआल को हक की तरफ ऐसे ख़याल करे जिस तराह कुंजी की हरकत को हाथ के साथ निस्बत है और मुर्दों की जुम्बिश को गुस्ल देने वाले के हाथ के साथ निस्बत है। किसी शए और किसी चीज़ को किसी ग़ैरे हक की तरफ निस्बत ना करे के सूफिया कराम के नज़दीक इसका नाम शिर्क फिल-अफआल है।

शिर्के सिव्वुम

शिर्के अख़्फा शिर्के फिल-सफात

अज़्रूए शरिअत ः

हदीसे पाक में हुज़ूर स.अ.व. ने इर्शाद फरमाया, मेरी उम्मत में शिर्क उस चींटी की चाल से ज़्यादा छुपा हुआ है जो अँधेरी रात में काले पत्थर पर चल रही हो। शरिअत में शिर्के अख़्फा के माना खुदा के सिवा किसी दूसरी शख़्सियत से नफा और नुक्सान का देखना है, उम्मीद और डर खुदा के सिवा किसी दूसरी ज़ात से करना है। मक्कारी व रियाकारी की बारीकियाँ और बनावटी पोशीदगी और गुरूर और तकब्बुर के छुपाने की कोशिश करना और लोगों की तारीफ से खुश होना और अपनी मज़म्मत और बुराई सुन कर रंजीदा होना है। इन औसाफे ज़मीमा से खुदको पाक रखना चाहिए।

अज़्रूए तरीकत व हकीकत :
अपने तमाम सिफात को नेज़ दूसरों की तमाम सिफात को सिफाते हक जाने और अपनी हर सिफत और दूसरों की हर सिफत को के जिससे मुराद इल्म और इरादत और मशियत और कुदरत और समा और कलाम वग़ैरा है। जिस तराह इसे पहले अपनी तरफ और दूसरों की तरफ निस्बत करता था, अपनी मिल्कीयत और दूसरों की मिल्कीयत जानता था, सब को हक की तरफ निस्बत करे और हक की सिफात जाने।

हज़रत सय्यद इफ्तेख़ार अली वतन साहब किब्ला र.अ. फरमाते हैं हकीकते नज़र को देखना इस शर्त से के नज़र से हिजाब हवासे हैवानी दूर हों ताके हवासे इन्सानी को पहुँचे और हवासे इन्सानी से आसारे रहमानी देखना चाहिए के हकीकत बीनाई क्या है? और इस बीनाई में बीना कौन है? अगर इस को समझेगा तो 'मुकामे मेहमूद' में पहँचेगा। समाअत से सुनना वह है के सुनने वाला कौन है, तमाम बशर के कानों से सुनने वाला एक ही है और गोयाई से हम कलाम होना वह के शाने नातिका जो कलीमे मतलक से मुश्तक है। जानना चाहिए के हर लिसाने बशर से वही ग़ैबुल-लिसान नातिक है जिसने सिफात को अपनी या ग़ैर की तरफ या सिफात को सिफातुल्लाह नहीं समझा उस पर शिर्क फिल-सफात लाज़िम होगा।

शिर्के चहारुम

शिर्क फिल-ज़ाते हक शिर्क फिल-वजूद

नहीं हक के सिवा मौजूद कोई
यही मतलब है लफ्ज़े मासिवा का

(वतन साहब किब्ला र.अ.)

वाज़ेह हो के لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ में दो लफ्ज़ काबिले ग़ौर हैं।
(1) اِلٰہَ (2) اللّٰہُ तर्जुमा इस कलमें का यह है के अल्लाह के सिवा कोई और "اِلٰہَ" नहीं है यानी सारी कायनात में एक हस्ती "اِلٰہَ" है और उसका नाम "اللّٰہُ" है। कुर्आन उसे अपनी इस्लाह में "اِلٰہَ" से ताबीर करता है, उसका नाम अल्लाह रख्ता है। "اِلٰہَ" वह है जो वाजिबुल-वजूद हो। अल्लाह के सिवा कोई "اِلٰہَ" नहीं है। यानी अल्लाह के सिवा कोई वाजिबुल-वजूद नहीं है।

वाजिबुल-वजूद उसे कहते हैं जो अज़ खुद मौजूद हो, जिसका होना ज़रूरी और ना होना मुहाल हो और जिसका वजूद ख़ाना ज़ाद हो यानी जिसे ग़ैर ने वजूद अता ना किया हो, जो अपने वजूद में किसी का मोहताज ना हो, जिसका वजूद मुस्तकिल बिल-ज़ात और हकीकी हो, चूँके वाजिब का वजूद ज़ाती होता है इस लिए इसके कमालात भी ज़ाती होंगे, यानी वह ग़नी होगा उसे किसी ऐतबार से भी ग़ैर की मोहताजी ना होगी।

कुर्आन हकीम का बग़ौर मुताल्ला करने से मालूम होगा के जितने कमालात और जिस कदर औसाफ "اِلٰہَ" के हैं वही सिफात वाजिबुल-ज़ात या वाजिबुल-वजूद के भी हैं। बतौरे नमूना चंद आयात आगाही के लिए दर्ज की जाती हैं।

اِلٰــــہَ : वाजिबुल-वजूद

اَللّٰہُ لَا اِلٰہَ اِلَّا ھُوَ اَلْحَیُّ الْقَیُّوْمُ لَا تَاْخُذُہٗ سِنَۃٌ وَّلَا نَوْمٌ لَہٗ
مَافِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ

तर्जुमा : अल्लाह है जिस के सिवा कोई माबूद नहीं वह आप ज़िंदा और औरों का कायम रखने वाला उसे ना ऊँघ आती है ना नींद उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीनों में ।

(सूरह बक़रा आयत 255)

अल्लाह वह है के सारी कायनात में उसके सिवा कोई " اِلٰہ " (वाजिबुल-वजूद) नहीं है यानी उसकी उल्हुइयत का इक़्तेज़ा यह है के

1 : वह खुदबखुद ज़िंदा है और सारी कायनात उसी के सहारे कायम है ।

2 : अगर वह ना होता तो सारी कायनात भी ना होती ।

3 : उसे ना ऊँघ आती है ना नींद , यानी वह तमाम माद्दी और जिस्मानी नकायस और उयूब से पाक है ।

4 : सारी कायनात उसकी ख़ादिम मतीए मम्लूक और फरमांबरदार है ।

لَوْ كَانَ فِيْهِمَآ اٰلِهَةٌ اِلَّا اللّٰهُ لَفَسَدَتَا.

तर्जुमा : अगर ज़मीन व आसमान में अल्लाह के अलावा कोई दूसरा " اِلٰہ " (वाजिबुल-वजूद) भी होता तो ज़मीन व आसमान दोनों तबाह व बर्बाद हो जाते ।

यह बात तो साबित हो गई के कायनात में अल्लाह के सिवा कोई हस्ती ' اِلٰہ ' या वाजिबुल-वजूद नहीं है । अल्लाह ही ' اِلٰہ ' है वाजिबुल-वजूद है उसके सिवा कोई वाजिबुल-वजूद नहीं है तो सारी कायनात का यकीनन " मुम्कीनुल-वजूद " है जिसे इल्मे मन्तक व फलसफा में " मुम्कीनुल-वजूद " कहते हैं । कुर्आन उसे मख़्लूक कहता है और उसकी तारीफ करता है जो हुक्मा ने बयान की हैं ।

मुम्किन वह है जिसका वजूद ज़ाती ना हो जिसका हकीकत वजूद ना हो बल्के अदम हो, जिसका वजूद किसी दूसरे पर मौकूफ हो जो किसी के मौजूद करने से मौजूद हो गया हो।

يا يها الناس انتم الفقراء الى الله و الله هوا لغنى الحميد

तर्जुमा : अए लोगो ! तुम सब अल्लाह के मोहताज हो और अल्लाह तो ग़नी और हमीद है यानी किसी का मोहताज नहीं।

1 : अल्लाह तो ग़नी और हमीद है यानी फलसफे इस्तेलाह में वाजिबुज़्ज़ात है।

2 : इन्सान (कायनात) मोहताज अली-अल्लाह है यानी कायनात की हर शए अल्लाह की मोहताज है यानी फलसफे की इस्तेलाह में 'मुम्कीनुल-वजूद' है।

अल्लाह वाजिब है उसकी ज़ात का तकाज़ा वजूद है मासिवा अल्लाह मुम्किन है उसकी ज़ात का तकाज़ा अदम है इसी लिए कुर्आन ने अल्लाह को हक और मासिवा अल्लाह को बातिल करार दिया है।

जब यह मालूम हो गया के वाजिब की हकीकत वजूद है और मुम्किन की हकीकत अदम है तो अब यह समझो के जिसकी हकीकत अदम है जब वाजिब उसे मौजूद करता है यानी ख़िलअते वजूद महज़ आर्ज़ी ज़िल्ली या मिजाज़ी या ऐतेबारी या वहमी होता है, पूरे हकीकते वजूद का इत्तेलाक उसी पर नहीं हो सकता उसका वजूद क्या है महज़ ज़िल्ली या मोहोम कोई मुम्किन हकीकी मानी में मौजूद नहीं होता क्यूँके हो नहीं सकता हकीकी मानी में सिर्फ "اِلٰہ" ही मौजूद है जिसे कुर्आन अल्लाह कहता है और अर्बाबे तसव्वुफ उसी सदाकत को जो لَآ اِلٰـہَ اِلَّا اللّٰہُ में

बयान हुई है अपनी इस्तेलाह में यूँ कहते हैं 'لَا' मौजूद 'اِلَّا اللّٰهُ'
खुलासाए कलाम لَآ اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰهُ का मतलब है।

1ः 'لَا' वाजिबुल-वजूद 'اِلَّا اللّٰهُ' यानी

2ः لَا مَوْجُوْدَ فِى الْحَقِيْقَةِ اِلَّا اللّٰهُ यानी

3ः لَا مَوْجُوْدَ اِلَّا اللّٰهُ

ग़लत फहमी का इज़ाला ः

हज़रात सूफिया कराम फरमाते हैं जब तक ताय्यूनात का पर्दा पड़ा हुआ है कोई शए खुदा नहीं है क्यूँके हर मुताय्यून शए मुकीद हो जाती है। खुदा हर मुकीद और मुताय्युन से बरी है यानी मतलक है। मुकीद और मतलक में ग़ैरियत है।

इस लिए ज़ाते हक ज़ाते अश्या में ग़ैरियत है अगरचा वजूद के ऐतबार से हर शए खुदा है मगर ज़ात के ऐतबार से हर शए ग़ैरे खुदा है। इस लिए किसी शए की तरफ इशारा नहीं कर सकते के वह शए खुदा है।

इस नाजुक मन्तके फर्क को एक मिसाल के ज़रिए समझें, हज़रते सूफिया यह नहीं फरमाते के " यह कायनात जल्वाए ज़ात है "।
बल्के इस बात को यूँ अदा फरमाते हैं के "जल्वाए ज़ात यह कायनात है"

एक नावाकिफ कार की नज़र में दोनों जुम्ले यक्सां हैं, मगर जो लोग इस कूचे से आश्ना हैं वह जानते हैं के दोनों जुम्लों में ज़मीन व आसमान का फर्क है। " ग़ौर कीजिए " जब आप यह कहते हैं के " यह कायनात " तो आप पहले अपने ज़हन में भी और सामइन के ज़हन में भी कायनात की हस्ती का अस्बात करते हैं, फिर इसे जल्वाए ज़ात करार देते हैं। इस तरह

आप कायनात और ज़ात दो हस्तियों या दो वजूदों को तक़सीम कर लेते हैं और अर्बाबे इल्म जान्ते हैं के यह " वहदतुल-वजूद " नहीं है बल्के " इत्तेहादतुल-वजूद " है जो इस्लाम की रू से कुफ्र वलहाद है। कायनात जल्वाए ज़ात नहीं है क्यूँके कायनात का बज़ात खुद वजूद ही कहाँ जो इसे मुब्दा करार दिया जाए।

हाँ यह ज़रूर है के जल्वाए ज़ात बसबब ताय्यूनात बशक्ले कायनात नज़र आ रहा है चूँके फिल-हकीकत मौजूद है इस लिए इसका अस्बात नाख़िलाफे अक़्ल है, ना ख़िलाफे शरआ।

अगर इस हकीकत को मल्हूज़े ख़ातिर रखा जाए तो खुद बखुद ग़लत फहमी का इज़ाला हो जाएगा। बहरे कैफ हज़रत मौलाना शाह अब्दुल अज़ीज़ मोहद्दिस देहलवी र.अ. लिखते हैं , अल्लाह की वहदानियत के दो मानी हैं। उल्माए ज़ाहिर के नज़दीक वहदानियत के मानी यह हैं के " माबूद सिर्फ एक है दूसरा कोई माबूद नहीं " है। हज़राते सूफिया के नज़दीक एक मानी यह है के " मौजूद सिर्फ एक है दूसरा कोई मौजूद नहीं " है।

मिनजुम्ला इन आयात के जिन से यह साबित होता है के सिर्फ एक ज़ाते हक मौजूद है।

فَاَيْنَمَا تُوَلُّوْا فَثَمَّ وَجْهُ اللّٰهِ

तर्जुमा ः पस तुम जिस तरफ रूख़ करो वहीं अल्लाह की ज़ात मौजूद है।

وَهُوَ مَعَكُمْ اَيْنَمَا كُنْتُمْ

तर्जुमा ः और वह तुम्हारे साथ है जहाँ कहीं भी तुम हो।

اَللّٰهُ نُوْرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

तर्जुमा ः अल्लाह ही नूर है आसमानों और ज़मीनों का।

(नूर का माना है जो बज़ाते खुद ज़ाहिर हुआ और दूसरों को ज़ाहिर कर दे यानी अल्लाह ही इस कायनात की हकीक़त है)

هُوَ الْاَوَّلُ وَالْآخِرُ وَالظَّاهِرُ وَ الْبَاطِنُ . وَهُوَ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِیْم

तर्जुमा : वही ज़ाते हक़ हर शए का अव्वल है वही हर शए का आख़िर है वही हर शए का ज़ाहिर है (हर शए से वही ज़ाहिर हो रहा है) वही हर शए का बातिन है और वह ज़ाते पाक हर शए का इल्म रखती है।

اَلا اِنَّهُ بِكُلِّ شَیْءٍ مُحِیْط

तर्जुमा : आगाह हो जाओ के अल्लाह ही हर शए का इहाता किए हुए है।

كُلُّ شَیْءٍ هَالِكٌ اِلَّا وَجْهَهُ.

तर्जुमा : अल्लाह की ज़ात के अलावा हलाक व फानी है यानी ज़ाते हक के अलावा कोई शए हकीकी माना में मौजूद नहीं है।

इसी लिए सूफिया कराम फरमाते हैं। अल्लाह के अलावा किसी को (1) माबूदे हकीकी (2) मक़्सूदे हकीकी (3) मतलूबे हकीकी (4) मौजूदे हकीकी मानना शिर्क है।

لَا مَعْبُوْدَ اِلَّا اللّٰه   لَامَقْصُوْدَ اِلَّا اللّٰه

لَامَطْلُوْبَ اِلَّا اللّٰه   لَامَوْجُوْدَ اِلَّا اللّٰه

हिकायत : हज़रत सूफी सरमद शहीद पर इल्ज़ाम था के आप पूरा कलमा नहीं पढ़ते थे, आप "لَااِلٰـهَ" से ज़्यादा नहीं पढ़ते थे, आप को मज्लिस के सामने बुलाया गया, उस मज्लिस में अलावा औरंगज़ेब के उल्माए असर भी मौजूद थे। औरंगज़ेब ने उल्मा को मुख़ातिब करके कहा, "इस से कहो के कलमाए तय्यब पढ़े"। आप से कलमाए तय्यब पढ़ने को कहा गया। आप ने आदत के मुआफिक "لَااِلٰـهَ" पढ़ा, जब उल्मा ने यह जुम्लाए नफी सुना तो सख़्त बर्हम हुए, आप ने जवाब दिया के " अभी तो मैं नफी में मुस्तगरक हूँ, मर्तबाए अस्बात तक नहीं पहुँचा हूँ

अगर اِلَّا اللّٰه कहूँगा तो झूट होगा "। उल्मा ने आपस में तए किया के आप का यह फेल कुफ्र है। इस फेल से तौबा लाज़मी है। आप ने तौबा ना की, उल्मा ने फत्वा दिया के कतल जाएज़ है। दूसरे दिन आप कतलगाह में ले जाए गए। जब जल्लाद ने चमकती तल्वार ले कर आप के पास आया, आप उसे देखकर मुस्कुराए नज़र उठाई और नज़र मिलाई और यह तारीख़ी अल्फाज़ फरमाए "मैं तेरे कुर्बान हूँ, आ आ के जिस सूरत में भी आए मैं तुझको खूब पहचानता हूँ "। शहादत के बाद आप के सर से तीन बार " لَا اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰه " की आवाज़ सुनाई दी। आप के सर ने कलमा ही नहीं पढ़ा बल्के कुछ देर हम्दे बारी तआला में भी मसरूफ रहा।

मुल्हिद के पाँच अक़साम

1) मुल्हिदे शरिअत ः जो ख़िलाफे शराअ काम करके खुद को मोहकीक समझे ।

2) मुल्हिदे तरीकत ः गुज़र बशर की ख़ातिर और हुसूले ज़र के लिए मख़्लूक की ख़िदमत करे।

3) मुल्हिदे हकीकत ः दावा फक़्र के बावजूद ग़ैरों की खुश आमद करने वाला।

4) मुल्हिदे मारिफत ः आरिफ होने के दावे के बावस्फ ग़ैरों को देखने वाला ।

5) मुल्हिदे वहदत ः मेहबूब को हाज़िर व नाज़िर जानते हुए भी दुआ को हाथ उठा कर तालिबे इम्दाद रहने वाला।

ज़िक्रे रूही

أَفْضَلُ الذِّكْرِ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ مُحَمَّدٌ رَّسُولُ اللهِ

अदबन कहूँगा ईसा तेरी मजाल क्या है
आशिक रसूल का भी मुर्दे जिला रहा है

(हज़रत पीर आदिल र.अ.)

"ज़रा ग़ौर कीजिए" आख़िर वह कौन से मुर्दे थे ? जिन्हें सय्यदना ग़ौसे पाक र.अ. व दीगर औलियाए कामलीन ने ज़िंदा फरमाया। अगर तबई तौर पर औलिया कराम ने किसी मुर्दे को ज़िंदा किया तो यह करामत , औलिया कराम की सदाकत की दलील ज़रूर बन सकती है।मगर मुर्दे को इस से कुछ फायदा हासिल ना होगा। क्यूँके मुर्दा ईमान बिल-ग़ैब के हुक्म से ख़ारिज हो चुका है क्यूँके देखकर ईमान लाना और है, ईमान लाकर देखना और।औलिया कामलीन की ज़ात सरापा फुयूज़ व बर्कात का सर चश्मा होती है के यह जिसे ज़िंदा कर दे मुक़ामे फना से मुकामे बका में पहुँचा दे फिर भला कौन है? जो इन्हें मुर्दा करदे। और इनका नाम व निशान मिटा दे। इस तराह की करामत को " करामते मानविया " और इस तराह फैज़ी विलादत को " विलादते सानिया " कहा जाता है। यह करामत हर औलिया कराम व मशाएख़ उज़्ज़ाम को हासिल है। इन्सान की शनाख़्त उसके दम से की जाती है के गोया वह 'ज़िंदा' है या 'मुर्दा'।जैसे हुज़ुरे अकरम स.अ.व. ने इर्शाद फरमाया।

اَلْاَنْفَاسُ مَعْدُوْدَاتٌ وَكُلُّ نَفَسٍ يَخْرُجُ بِغَيْرِ ذِكْرِ اللّٰهِ فَهُوَ مَيِّتٌ.

तर्जुमा ः इन्सान की साँसें गिनती की होती हैं और जो साँस बग़ैर ज़िक्र

(لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ) के निकले पस वह मुर्दा है।
एक और हदीस में है ।

مَثَلُ الَّذِىْ يَذْكُرُ اللّٰهَ وَالَّذِىْ لَايَذْكُرُ اللّٰهَ مَثَلُ الْحَيِّ وَالْمَيِّتِ

तर्जुमा ः जो शख़्स अल्लाह तआला का ज़िक्र करता है , और जो नहीं करता इन दोनों की मिसाल ज़िंदा और मुर्दा की सी है।
यानी ज़ाकिर ज़िंदा और ग़ाफिल मुर्दा के मानिंद है। हालाँके जुबानी तौर पर ज़िक्र करने वालों की कमी नहीं जिसे ज़िक्रे लिस्सान दो होंट हिले एक जुबान से ताबीर किया जाता है। इस तरह जुबानी ज़िक्र से चंद फायदे ज़रूर होते हैं के वह फुजूल गोई से बच जाता है मगर कल्ब को इस से कोई जुम्बिश नहीं होती और ना मज़्कूर को मुशाहेदा नसीब होता है। मज़्कूर को मुशाहेदा तो कल्ब के मुसफ्फा होने के बाद ही हो सकता है और कल्ब बग़ैर ज़िक्रे कल्बी के मुसफ्फा नहीं हो सकता। जैसे के हुज़ूर नबीए करीम स.अ.व. का इर्शाद है ।

اِنَّ لِكُلِّ شَیْءٍ صِقَالاً وَّصِقَالاُ الْقَلْبُ ذِكْرُ اللّٰهِ تَعَالیٰ

तर्जुमा ः बेशक हर चीज़ की सफाई के लिए कोई चीज़ होती है इसी तरह कल्ब को पाक व मुसफ्फा करने के लिए अल्लाह का ज़िक्र है।

हदीस में चूँके ज़िक्र को दिल की सफाई का ज़रिया बताया गया है इस लिए के हर इबादत उसी वक़्त इबादत हो सकती है जब अख़्लास से अदा हो और अख़्लास का मदार दिलों की सफाई पर है इसी वजह से सूफिया कराम ने कहा है के इस हदीस में ज़िक्र से मुराद ज़िक्रे कल्बी है , ना के ज़िक्रे लिस्सानी ।

وَلَا تُطِعْ مَنْ اَغْفَلْنَا قَلْبَهٗ عَنْ ذِكْرِنَا तर्जुमा ः और उसकी इताअत ना करें जिसके दिल को हम ने अपनी याद से ग़ाफिल कर दिया।

(सूरहए कहफ आयत 28)

इस आयत में वाज़ेह दलील है के उनकी इताअत ना करें जिनके दिल

हमारी याद से ग़ाफ़िल हैं। दूसरे लफ़्ज़ों में उनकी इताअत करें जिनके दिल में हमारी याद है। ज़िक्रे क़ल्बी के सबूत में इस से बड़ी दलील और पेश नहीं की जा सकती।

अक़ली दलील ः कभी किसी माँ ने बेटे से यह नहीं कहा के बेटा मेरी ज़ुबान तुम्हें बहुत याद करती है। बल्के हमेशा यही कहेगी के बेटा मेरा दिल तुम्हें बहुत याद करता है। मालूम हुआ के जिस्मे इन्सानी में याद का मुक़ाम इन्सान का क़ल्ब है। जबके ज़ुबान से इसका इज़्हार होता है।

मुमल्कते बदन में दिल सुल्तानुल-आज़ा का मुकाम रखता है और सारे आज़ाए ज़ाहिरा व बातिना दिल के ताबे हैं और दिल जिसके साथ वाबिस्ता हो जाता है सारे ही आज़ा उसके साथ हो जाते हैं।
हदीसे नब्वी स.अ.व.

إِنَّ فِىْ جَسَدِابْنِ اٰدَمَ لَمُضْغَةً فَإِذَا صَلَحَتْ صَلَحَ الْجَسَدُ كُلُّهٗ وَإِذَا
فَسَدَتْ فَسَدَ الْجَسَدُ كُلُّهٗ، اَلَا وَهِىَ الْقَلْبُ

तर्जुमा ः बेशक इन्सान के जिस्म में गोश्त का एक टुकड़ा है जब वह दुरूस्त होता है तो सारा बदन दुरूस्त होता है और जब वह ख़राब होंता है तो सारा बदन ख़राब होता है। सुनलो के वह क़ल्ब है।

(बुख़ारी शरीफ)

आज भी अहले सिलसिलाए कादरिया आलिया खुल्फाइया के मशाएख़ उज़्ज़ाम अपने मुरिदीन को तस्दीक बिल-कल्ब لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ इश तरह अदा करवाते हैं के दिल की हर धड़कन तौहीद व रिसालत की शहादत देने लगती है। यह ज़िक्र बिल-कलब का ही एजाज़ है के आज भी सैंकड़ों अहले सिलसिला नींद की हालत में भी कलमाए तय्यबा के ज़ाकिर हैं।

हुजूर स.अ.व. का इर्शाद है। تَنَامُ عَيْنَا وَلَا يَنَامُ قَلْبِى
तर्जुमा : मेरी सिर्फ आँख सोती हैं कल्ब नहीं सोता। (मस्नद अबू दाऊद)

ذِكْرُلِلّسَانِ لَقَلْقَةٌ وَذِكْرُ الْقَلْبِ وَسْوَسَةٌ وَذِكْرِ الرُّوحِ مَشَاهِدَةٌ.

याद रखो : ज़िक्रे कल्बी नफ्से मुत्मईना के जानिब उठने वाला पहला कदम है और ज़िक्रे रूही नफ्से मुत्मईना का दरवाज़ा है और ज़िक्रे सिर्री जो कील व काल से बाहर है, जिसके मुताल्लिक सिर्फ इतना कहा जा सकता है के यह ज़िक्र मुकामे अख़्फा से जारी होता है जिसकी वजह से हमेशा आँखों में खुमार सा रहता है।

बहरे कैफ, पीरे कामिल रूहानी किसान के मानिंद है जो दिल की मुर्दा ज़मीन व बंजर ज़मीन को कुव्वते बातिना की खाद व आब देता है और फिर ज़िक्रे रूही لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ का 'हल' चलाता है और तवज्जए ख़ास से कुछ दिनों में दिल की मुर्दा ज़मीन सरसब्ज़ व शादाब हो जाती है। इर्शादे खुदावंदी है।

وَاذْكُرْ رَّبَّكَ فِىْ نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَّخِيْفَةً وَّدُوْنَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ
بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ وَلَا تَكُنْ مِّنَ الْغٰفِلِيْنَ

तर्जुमा : और अपने रब को अपने दिल में याद करो (ज़िक्रे कल्बी) ज़ारी और डर से और बेआवाज़ निकले जुबान से (ज़िक्रे ख़फी) सुबहा और शाम और ग़ाफिलों में ना होना। (सूरहए एराफ आयत -205)

1 : وَاذْكُرْ رَّبَّكَ तर्जुमा : अपने रब का ज़िक्र करो। यह सैग़ा फेले अमर है। जिस से ज़िक्र की ताकीद, तल्कीन, रूग़बत साबित होती है।

2 : فِىْ نَفْسِكَ तर्जुमा : अपने दिल में, अपने ख़याल में, अपनी रूह में, अपनी जान में, अपनी ज़ात में, अपनी साँस में, अपने दम में, किया जा सकता है मगर "अपनी जुबान से" तो हरगिज़ नहीं किया जा सकता।

लिहाज़ा सूफिया कराम पर एतेराज़ करने वाले इस फर्माने इलाही को ग़ौर से पढ़ें और खुद ही फैसला करें के ज़िक्र बिल-कल्ब और ज़िक्रे ख़फी वग़ैरा के उसूल व क़वायद सूफिया ने मुरत्तीब फरमाए हैं वह किताब व सुन्नत के मुताबिक हैं या ख़िलाफ।

मस्नद अबू ऐली में हज़रत आइशा सिद्दीका र.अ. से रिवायत है के हुजूर स.अ.व. ने इर्शाद फरमाया के वह ज़िक्रे ख़फी जिसको फरिश्ते भी ना सुन सकें सत्तर दर्जा दोचंद होता है। जब कयामत के दिन हक सुब्हानहू तमाम मख़्लूक़ को हिसाब के लिए जमा फरमाएगा और करामन कातबीन आमाल नामे ले कर आएँगे तो इर्शाद होगा फलां बंदा के आमाल देखो कुछ और बाकी हैं, वह अर्ज़ करेंगे हमने कोई भी ऐसी चीज़ नहीं छोड़ी जो लिखी ना हो और मेहफूज़ ना हो। तब इर्शाद होगा के हमारे पास इसकी ऐसी नेकी बाकी है जो तुम्हारे इल्म में नहीं वह "ज़िक्रे ख़फी" है।

बहेकी ने शुअब में सय्यदा आइशा सिद्दीका र.अ. से यह हदीस नकल की जाती है के जिसको फरिश्ते भी ना सुन सकें वह इस ज़िक्र से जिसको वह सुनें सत्तर दर्जे बढ़ा हुआ है। किसी शायर ने क्या खूब कहा है।

मियाने आशिक व माशूक रम्ज़ यस्त
करामन कातबीन राहम ख़बर नेस्त

यानी मुहिब व मेहबूब में एक ऐसी रम्ज़ भी है जिसकी करामन कातबीन को भी ख़बर नहीं होती।

हदीस में इर्शाद है ।

كل دم حاضرة من ذكر الخفى فهو مومن.
كل دم غافلة من الذكر الخفى فهو ميت

तर्जुमा ः यानी जो दम हाज़िर है ज़िक्रे ख़फी से पस वह मोमिन है और जो दम ग़ाफिल है ज़िक्रे ख़फी से पस वह जाहिल है।

(फज़ायले तब्लीग़ सफ्हा **20** शेखुल-हदीस मौल्वी मोहम्मद ज़िक्रिया साहब)

सुल्तान बाहू र.अ. फरमाते हैं, फिका का एक मसला सीखना एक साल की इबादत के बराबर है। एक दम खुदा का नाम लेना और उसकी याद में रहना हज़ार साल के सवाब से अफ्ज़ल है। क्यूँके फिका का पढ़ना और तिलावते कुर्आन करना इबादते ज़ाहिरी है जिसकी कज़ा मुम्किन है और गुज़रे हुए वक़्त की कज़ा मुम्किन नहीं।

(ऐनुल-फक़्र सफ्हा **12**)

नफ्स की आमद व शुद है नमाज़े अहले यकीन
जो यह कज़ा हो तो फिर दोस्तो कज़ा समझो

فَاذْكُرُوا اللّٰهَ قِيَامًا وَّ قُعُوْدًا وَّعَلٰى جُنُوْبِكُمْ

तर्जुमा ः पस अल्लाह की याद करो खड़े और बैठे और करवटों पर लेटे हुए। (सूरह निसा आयत-**103**)

हज़रत इब्ने अब्बास र.अ. ने फरमाया , अल्लाह तआला ने हर फर्ज़ की हद मुईन फरमाई सिवाए ज़िक्र के इसकी कोई हद ना रखी।

हुज़ूर अकरम स.अ.व. का इर्शादे पाक है।

لم يود الفرض الدائم لن يقبل اله فرض الوقت.

तर्जुमा ः यानी जो शख़्स फर्ज़े दायमी अदा नहीं करता अल्लाह तआला उसके वक़्ती फर्ज़ को कबूल नहीं करता।
चार वक़्ती फर्ज़ यह हैं ः नमाज़ , रोज़ा , हज और ज़कात ।

और दायमी फर्ज़ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ है। पस तालिबे हक को इस दायमी फर्ज़ से ग़फिल नहीं रहना चाहिए। चुनांचे शेखुल-इस्लाम हज़रत ख़्वाजा कुतबुद्दीन मौदूद चिश्ती र.अ. फरमाते हैं।

मिज़न बे यादे मौला यक नफ्स रा
अगर दर सू मआदया कुश्ती

पस इन्सान को साँस लेते वक़्त और बाहर निकालते वक़्त हर हालत में ज़ाकिर रहना चाहिए ताके इस दायमी ज़िक्र से दिल की इस्तेलाह हो, जैसे के हदीस शरीफ में आया है।

لِكُلِّ شَيْءٍ مُصْقِلَةٌ وَمُصْقِلَةُ الْقَلْبِ ذِكْرُ اللّٰهِ.

बाज़ दुर्वेश ऐसे भी हैं जिनकी जुबान साकिन होती है और दिल यादे इलाही में मश्गूल होता है जिसको खुद अपने कानों से सुन लेता है।
(मुफ्ताहुल-आश्कीन, चौथी मज्लिस)

हज़रत ख़्वाजा नसीरूद्दीन मेहमूद चिराग़ दहल्वी र.अ. फरमाते हैं, असली ज़िंदगी वही है जो यादे हक में गुज़रे और जो इसके इलावा वह बमन्ज़ीलए मौत है।

ग़ाफिल ज़े अहतेयाते नफ्स यक नफ्स मुबाश
शायद हमें नफ्स नफ्से वापसें बूद

तर्जुमा ः अए ग़फिल अपनी साँस की आमद व शुद से एक साँस के लिए भी ग़ाफिल ना रह, हो सकता है के यही साँस तेरी ज़िंदगी की आख़री साँस हो।

हज़रत सुल्तान बाहू र.अ. फरमाते हैं, याद रखो जो शख़्स तमाम उम्र रोज़ा रख्खे, नमाज़ पढ़े, हज करे, ज़कात दे, शब व रोज़ तिलावते कुर्आन करता रहे, मगर कलमाए तय्यबा अदा ना करे या इस से ज़रा भी इन्हेराफ करे वह हरगिज़ मुसलमान नहीं है और कोई इबादत इसकी

मक़्बूल नहीं। जैसे काफिर या अहले बिदअत व इस्तदराज की तमाम इबादत रायगाँ हैं। क्यूँके हदीस में اَفْضَلُ الذِّكْرِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ आया है। इबादत ज़िक्र की मोहताज है और अहले ज़िक्र व फिक्र ग़ैर मोहताज हैं। जिस शख़्स के दिल में तस्दीके ईमान नहीं है उसे ज़िक्र भी हासिल नहीं। ऐसे शख़्स को मोमिन व मुसल्मान भी नहीं कह सकते।

अब जानना चाहिए के तस्दीके क़ल्बी किस चीज़ से हासिल होती है। तस्दीके क़ल्बी ज़िक्रे क़ल्ब से हासिल होती है और ज़िक्रे क़ल्ब मुर्शिदे वासिल अलीअल्लाह से, जिसकी यह सिफत हो يُحْيِ الْقَلْبَ وَ يُمِيتُ النَّفْس (जो नफ्स को मारे और क़ल्ब को ज़िंदा करदे) जिस तरह जुबान एक उज़ू है, यही दिल का हाल है। वह आज़ाए जिस्मानी में से एक उज़ू है, जिस तराह के जुबान बुलंद आवाज़ से कलमाए तय्यबा पढ़ती है दिल भी इसी तरह आवाज़ से कहने लगता है। لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ और अपने कानों से सुनता भी है।

हर साँस के आने जाने में कलमे के सिवा पैग़ाम नहीं
दरबारे इलाही में ऐसा बढ़ चढ़ के कोई इनाम नहीं

(हज़रत पीर आदिल र.अ.)

हज़रत ख़्वाजा बंदा नवाज़ गेसू दराज़ बुलंद परवाज़ र.अ.फरमाते हैं।

नफ्स है इक एक अपना जान है इक एक नबी अलैह सलाम
ग़ैरे ज़िक्रे हक़ हुए क़त्ल है इक सही
नहीं किया अन्फास कुछ पास तू अए तबतग़ी
याने सत्तर मर्तबा काबे को तोड़ा अए अख़ी

शम्शुल-आरिफीन में है के इन्सान के वजूद में दो दम हैं। एक वह जो अंदर जाता है दूसरा वह जो बाहर आता है। इन दमों पर दो फरिश्ते मोवक्किल हैं। जब इन्सान अंदर की तरफ दम लेता है तो मोवक्किल अल्लाह तआला के हुजूर में अर्ज़ करता है के परवरदिगार मैं अंदर दम कब्ज़ करूं या फिर बाहर जाने दूँ। और दम जब बाहर जाता है तो भी यही अर्ज़ करता है और वह दम जो इस्मे अल्लाह के तसव्वुर से बाहर निकलता है वह नूरानी सूरत में बारगाहे इलाही में चला जाता है और मिस्ले मोती के हो जाता है के जिसकी कीमत का मुकाबला दोनों जहाँ के अस्बाब भी नहीं कर सकते और वह बेबहा मोती है। इसी वास्ते फकीरों को अल्लाह का ख़ज़ान्ची कहते हैं।

(शम्शुल-आरिफीन बाब दुव्वम सफहा -1112)

महकुल-फुक्रा में सुल्तान बाहू र.अ. ने एक हदीस नक्ल की है के जब बंदा لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ कहता है तो उसकी साँस से एक सब्ज़ परिन्दा पैदा किया जाता है के उसके पर मोती और याकूत से होते हैं और वह अर्श के नीचे जाता है और कांपता है। खुदा तआला का फरमान होता है के अए परिन्दा साकिन हो। वह कहता है खुदा वंद क्यूँकर साकिन हूँ के इस कलमा पढ़ने वाले को तू नहीं बख़्शता है। फरमान होता है के हमने बख़्श दिया उसको।

(महकुल-फुक्रा सफहा 307)

एक और जगह फरमाते हैं, कलमाए तय्यब सरासर तासीर रखता है। इधर इक़रार जुबानी हुआ। उधर तस्दीक कल्बी हो गई। पस जिस वक़्त तस्दीक दुरूस्त हुई उस वक़्त कलमए तय्यब لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ की तासीर तमाम जिस्म के वजूद में सरायत कर जाती है, और नफ्स फानी हो जाता है और हर एक दिल की रूह के साथ मुसाफाह और मुलाकात रूहानी हो जाती है। बशर्त यह के तौफीक हक रफीक हो और उस वक़्त विलायत औलिया अल्लाह के मरातिब पर

मिस्ल हज़रत राबिया बसरी र.अ. के व हज़रत सुल्तान बायज़ीद र.अ. के पहुँच जाती है। (महकुल-फुक्रा सफहा 91)

ज़िक्रे रूही से जिसे प्यार हुआ
अल्लाह वालों में वोह शुमार हुआ
(हज़रत पीर आदिल र.अ.)

हज़रत शाह वली अल्लाह मोहद्दिस देहलवी र.अ. ने " कौले जमील " में अपने वालिद से नकल किया है के मैं इब्तेदाए सुलूक में एक साँस में لَآ اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰهُ दो सौ मर्तबा कहा करता था।
(कौलुल-जमील शिफाउल-अलील सफहा 85)

पस अज़सी साल अएँ मानी मोहक्कि शुद बा ख़ाक़ानी
के एक दम बा खुदा बूदन बा अज़ मुल्क सुलेमानी

तीस साल की मुसलसल तहकीक व जानफिशानी के बाद ख़ाकानी पर यह नुक्ता खुला के दम भर का ज़िक्रे इलाही हज़रत सुलेमान अलैह सलाम की बादशाही से कहीं बेहतर है। अपनी एक एक साँस की निगेहबानी करने वाले औलिया व सॉलेहीन ने एक लम्हा की ग़फ्लत भी गवारा ना की और हर हाल में नफ्स की आमद व शुद पे कड़ी नज़र रखी।

हज़रत बायज़ीद बुस्तामी र.अ. फरमाते हैं के औरतों का मुआम्ला हमारे मुआम्ले से बेहतर है, क्यूँके वह हर महीने में गुस्ल करके नापाकी से पाक होतीं हैं और हमें सारी उम्र पाकी का गुस्ल नसीब ना हुआ। अल्लाहु अकबर और आप ने फरमाया के अगर एक बार सारी उम्र में لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ बायज़ीद र.अ. से सही और दुरूस्त निकल आए तो फिर बायज़ीद र.अ. को किसी से ख़ौफ नहीं है।

सरकार पीर आदिल बीजापूरी र.अ. फरमाते हैं।

हर साँस को पूछेगा महशर में खुदा वंदा
हर साँस में कलमे को हम डट के सुना देंगे

पस राहे सुलूक में हर तालिबे मौला पर फर्ज़ है के दम की निगेहबानी करे।

नफ्स की आमद व शुद की जो करता है निगेहबानी
उसी पर मुन्कशिफ होते हैं अस्रारे खुदा दानी

(ज़ाकिर)

اَلَمْ يَاْنِ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْآ اَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِاللّٰهِ

तर्जुमा : क्या ईमान वालों के लिए इसका वक़्त नहीं आया के उनके दिल अल्लाह के ज़िक्र के लिए झुक जाएँ। (सूरह हदीद आयत 16)

ज़िक्र की अहमियत व ज़ाकिर की फज़ीलत

"बस तेरा ज़िक्र करता रहूँ मैं"

कुर्आन मजीद व हदीसे मुबारका में जगह जगह ज़िक्र की अहमियत उसकी बुजुर्गी उसकी अज़मत को बयान करके ज़िक्र की रूग़बत दिलाई गई के ज़िक्र करने को ईमान की अलामत और ज़िक्र से ग़फ्लत और सुस्ती को ना शुक्री और कुफ्र की निशानी की वईद सुनाई गई सहाबा कराम व औलिया कराम के अक़्वाले ज़र्री व अमली ज़िंदगी जिसका ज़िंदा नमूना है।

اَلاَ بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوْبُ तर्जुमा ः ख़बरदार हो जाओ अल्लाह ही के ज़िक्र में दिलों का सुकून है। (सूरह रअद आयत 28)

आज दुनिया के तकरीबन लोग इज़्तेराबे क़ल्ब व ज़हनी तनाव में मुब्तला हैं। इस बीमारी के पेशे नज़र मेडीकल साएन्स ने बेशुमार ऐसी दवाईयाँ ईजाद की हैं जिसके इस्तेमाल से वक़्ती तौर पर राहत नसीब हो सक्ती है मगर दूसरी तरफ इस दवा के कसरते इस्तेमाल से मुज़ीर असरात दामनगीर हो जाते है। " इधर तदबीर करते हैं उधर तक़्दीर हँस्ती है " बक़्त व पैसे की बर्बादी के साथ साथ सेहत की ख़राबी भी हासिले जमा हो जाती है। मगर कुर्बान जाइए अर्रहमुर्रहिमीन पर जिसने हर दर्द की दवा और हर परेशानी का हल अपने मुकद्दस व बरतर नुस्खए कीम्याए असर "ज़िक्र" में पोशीदा रखा है। यह इतमेनाने क़ल्ब की दौलत जिसको मयस्सर हो जाए समझो वह ग़नी हो गया। यह इतमेनाने क़ल्ब और कामिल यक्सूई ही थी जो हज़रत अली करमल्लाहू वज्हू के पैर से बहालते नमाज़ तीर निकाले जाएँ और आप को मुतलक ख़बर ना हो। इस नुस्खए ज़िक्र के मुताल्लिक इर्शादे वंदी है। " ذِكْرًا كَثِيْرًا " यानी ज़्यादा से ज़्यादा ज़िक्र किया करो। जिसके कोई मुज़ीर असरात नहीं बल्के कसरते ज़िक्र से मुफीद नताएज बरआमद होंगे।

يَا أَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوا اللّٰهَ ذِكْرًا كَثِيْرًا وَّسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا.

तर्जुमा ः ऐ ईमान वालों अल्लाह को बहुत याद करो और सुबह व शाम इसकी पाकी बोलो। (सूरहए अहज़ाब आयत ः 4142)

अल्लाह तआला कुर्आन मजीद में एक और जगह फरमाता है।

وَالذّٰكِرِيْنَ اللّٰهَ كَثِيْرًا وَّالذّٰكِرٰتِ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِيْمًا

तर्जुमा ः और अल्लाह को बहुत याद करने वाले और याद करने वालियां इन सबके लिए अल्लाह ने बख़्शिश और अजरे अज़ीम तैयार कर रखा है। (सूरह अहज़ाब आयत 35)

एक मोमिन मर्द और औरत के लिए इस से हसीन तोहफा क्या होगा के जिसे मग़फिरत की बशारत मिल जाए और दुनिया में सुकूने कल्ब व तस्कीने जाँ नसीब हो। यहाँ ज़िक्र में कसरत आ रही है और वहाँ नेअमतों में कसरत आ रही है। 'सुब्हान अल्लाह'

فَاذْكُرُوا اللّٰهَ قِيَامًا وَّ قُعُوْدًا وَّ عَلٰى جُنُوْبِكُمْ

तर्जुमा ः पस अल्लाह की याद करो खड़े और बैठे और करवटों पर लेटे।
(सूरह निसा आयत **103**)

हज़रत इब्ने अब्बास र.अ. ने फरमाया अल्लाह तआला ने हर फर्ज़ की एक हद मुईन फरमाई सिवाए ज़िक्र के इसकी कोई हद ना रखी, फरमाया ज़िक्र करो खड़े बैठे करवटों पर लेटे रात में हो या दिन में, खुश्की में हो या तरी में, सफर में और हज़र में, ग़ना में और फकर में, तनदुरूस्ती और बीमारी में, पोशीदा और ज़ाहिर।
एक और जगह इर्शाद है। "जो अल्लाह की याद करते हैं खड़े और बैठे और करवटों पर लेटे और आसमानों और ज़मीन की पैदाइश में ग़ौर करते हैं के ऐ रब हमारे लिए तू ने यह बेकार ना बनाया पाकी है तुझे तू हमें दोज़ख़ के अज़ाब से बचाले"। (सूरह इमरान आयत **191**)

मरवी है के अल्लाह तआला की हम्द व सना कोई फरिश्ता हालते कयाम में कर रहा है, कोई फरिश्ता हालते रूकू में, तो कोई फरिश्ता हालते सुजूद में, नेज़ आलम में कुल मख़्लूकात इनही तीन हालतों में ज़िक्र कर रहे हैं मगर हज़रते इन्सान साहिबे ईमान को अल्लाह तआला ने तीनों हालतों में ज़िक्र करने की कुव्वत बख़्शी है। यह शर्फ ही इन्सान को कुल मख़्लूकात पर अशरफ बनाता है गर्ज़ इन्सान की पूरी ज़िंदगी इनही तीनों हालतों से गुज़रती है। बवक़्ते पैदाइश करवटों पर लेटा रहता है, कुछ महीने बाद बैठने लगता है, फिर कुछ और महीने बाद अपने पैरों पर खड़े

होने लगता है। आख़िर कार इसी हालते अव्वल की तरफ आ जाता है यानी फौत होने के बाद फिर दूसरी ज़िंदगी की शुरूवात भी इसी तरहा होगी के कब्र में लेटाया जाएगा फिर हश्र में सब कयाम की हालत में होंगे और फिर अल्लाह की दहशत व जलाल से लोग घुटने के बल बैठ जाएँगे। अगर बंदा तीनों हालतों में दम बदम उसका ज़िक्र करता है तो गोया उसने तीनों हालतों का जो शर्फ बख़्शा गया था उसका शुक्र बजा लाया। क्यूँके ज़िक्र ही शुक्र की जड़ है।

हज़रत अबू हुरेरा र.अ. से रिवायत है के हुज़ूर स.अ.व. ने इर्शाद फरमाया के क़यामत के दिन एक आवाज़ देने वाला, आवाज़ देगा अक़्लमंद लोग कहाँ हैं? लोग पूछेंगे के अक़्लमंद से कौन मुराद है? जवाब मिलेगा वह लोग जो अल्लाह का ज़िक्र खड़े बैठे और लेटे हुए करते थे, और आसमानों ज़मीनों के पैदा होने में ग़ौर करते थे के या अल्लाह तू ने यह सब बे फायदा पैदा नहीं किया, हम तेरी तस्बीह करते हैं तू हमको जहन्नुम के अज़ाब से बचाले। इसके बाद उन लोगों के लिए एक झंडा बनाया जाएगा जिसके ज़ेरे साया सब जाएँगे और उनसे कहा जाएगा हमेशा के लिए जन्नत में दाख़िल हो जाओ। (अस्बेहानी)

हुजूर स.अ.व. फरमाते हैं के अल्लाह का ज़िक्र इस कसरत से करो के लोग तुम्हें दीवाना कहने लगें। (मस्नद इमाम अहमद)

हुजूर स.अ.व. फरमाते हैं अगर तुम हर वक़्त ज़िक्र में मशगूल रहो तो फरिश्ते तुम्हारे बिस्तरों और तुम्हारे रास्तों में तुमसे मुसाफाह करेंगे। एक हदीस में है के मुफर्रिद लोग आगे बढ़ेंगे, सहाबा ने अर्ज़ किया मुफर्रिद कौन हैं? आप स.अ.व. ने इर्शाद फरमाया जो अल्लाह के ज़िक्र में वालेहाना तरीके पर मशगूल हैं।

अफ़ज़लुल-अमल ः

हजरत अबुलदर्दा र.अ. से रिवायत है के हुजूर अकरम स.अ.व. फरमाते हैं। क्या मैं तुम्हें तमाम आमाल से बेहतर खुदा के नज़दीक ज़्यादा पसन्दीदा और तुम्हारे दर्जात की बुलंदी के बहुत बड़े सबब सोना, चाँदी ख़र्च करने से बेहतर और दुश्मनों से लड़ कर मरने और मारने से बेहतर चीज़ ना बताऊँ, सहाबा कराम ने कहा हाँ! या रसूल अल्लाह ज़रूर बताएं, आप स.अ.व. ने फरमाया वह अल्लाह का ज़िक्र है। (इमाम अहमद, तिर्मिज़ी, इब्ने माजा, हाकिम, बेहकी, अबुल-दर्दा)

हज़रत सलमान फार्सी र.अ. से किसी ने पूछा के सबसे बड़ा अमल क्या है? उन्होंने फरमाया के तुमने कुर्आन शरीफ नहीं पढ़ा, कुर्आनि पाक में है " وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ " तर्जुमा ः और बेशक अल्लाह का ज़िक्र सबसे बड़ा है। (सूरह अनकूबत आयत 45)

हुजूर अकरम स.अ.व. फरमाते हैं जो वक़्त बग़ैर ज़िक्रे इलाही के ख़ाली गुज़र गया बरोज़े कयामत वही साअत हसरत का मोवज्जिब बनेगा।

हज़रत माज़ बिन जबल र.अ. फरमाते हैं जन्नती को किसी चीज़ का अफसोस नहीं होगा मगर उस वक़्त का जो वक़्त ज़िक्रे इलाही से ख़ाली गुज़र गया।

शबे बेदार ज़ाकिर की फज़ीलत ः

इनके पहलू ख़्वाबगाहों से अलाहेदा रहते हैं इस तरह पर के अज़ाब के ख़ौफ से और रहमत की उम्मीद से वह अपने रब को पुकारते हैं और हमारी दी हुई चीज़ों में से ख़र्च करते हैं पस कोई नहीं जानता के ऐसे

लोगों की आँखों की ठंडक का क्या क्या सामान ख़ज़ानए ग़ैब में महफूज़ है जो बदला है उनके आमाल का। (सूरह सजदा आयत ः 1617)

अल्लाह तआला ज़ाकरीन का हम नशीन ः

فَاذْكُرُونِیْ اَذْكُرْكُمْ وَاشْكُرُوْالِیْ وَلَاتَكْفُرُوْنِ

तर्जुमा ः पस तुम मेरा ज़िक्र करो मैं तुम्हारा ज़िक्र करूँगा और मेरा शुक्र अदा करो और मेरी ना शुक्री ना करो। (सूरह बक्रा आयत 152)

हज़रत अबू हुरेरा र.अ. से रिवायत है के सय्यदे आलम स.अ.व. ने इर्शाद फरमाया हक सुब्हानहू का फरमान है के मैं बंदे के साथ वैसा ही मुआमला करता हूँ जैसा के वह मेरे साथ गुमान रखता है। जब वह मुझे याद करता है तो मैं उसके साथ होता हूँ। पस अगर वह मुझे अपने नफ्स (साँस) में याद करता तो मैं भी उसको अपनी ज़ात में याद करता हूँ और वह अगर मुझे मज्लिस में याद करता है तो मैं उसको उस मज्लिस से बेहतर व आला मज्लिस (यानी फरिश्तों की)में याद करता हूँ।
(बुख़ारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी, निसाई, इब्ने माजा, बेहकी)

हज़रत अनस र.अ. से मर्वी है के हुजूर स.अ.व. ने इर्शाद फरमाया, ऐ इब्ने आदम अगर तुम मुझे अपने दिल में याद करता है तो मैं तुझे अपनी ज़ात में याद करता हूँ। (मस्नद इमाम अहमद)

हदीसे कुदसी है " अहले ज़िक्र मेरे अहले मज्लिस हैं " उल्माए दीन एक मुसल्मान को फराएज़ व वाजिबात की अदाएगी के बाद जुबानी ज़िक्र व तिलावत के इलावा और क्या बता सकते हैं। नफ्स, कल्ब और रूह व सिर्र की कुंजी सिर्फ मशाएख़ रखते हैं। जो मुरीद जुबान से, कल्ब से, रूह से, अपने तमाम वजूद से हक सुब्हानहू को याद कर रहा हो उसे

अल्लाह तआला भी किस किस अन्दाज़ से याद फरमाएगा उसकी लिज़्ज़त तो अहले तरीकत ही जानते हैं।

वह खुश नसीब हैं जिनको अपने मशाएख़ से ज़िक्र बिलकल्ब की दौलत नसीब हुई है और जिनकी हर साँस अपने मआबूद के ज़िक्र में सर्फ होती है इनसे बढ़ कर अल्लाह तआला के कुर्ब व मुईत की दौलत और कौन पा सकता है। यही वजह है के औलिया अल्लाह को "لَاخَوفٌ عَلَيهِمْ وَلَاهُمْ يَحزَنُونَ" के लाफानी एज़ाज़ से नवाज़ा गया।

हूज़ूर स.अ.व. को ज़ाकरीन की हम नशीनी का हुक्म ः

وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ

يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ وَلَا تَعْدُ عَيْنٰكَ عَنْهُمْ.

तर्जुमा ः (ऐ मेहबूब) अपने आप को उन लोगों के साथ रखा कीजिए जो अपने रब को सुबह व शाम पुकारते हैं और उसी के चहरे के इरादे रखते हैं (रज़ा मंदी चाहते हैं) आपकी निगाहें उनसे ना हटने पाए।

(सूरह कहफ आयत **28**)

इन आयात के नुजूल के बाद हुजूर अकरम स.अ.व. उन लोगों की तलाश में निकले। एक जमात को देखा के अल्लाह के ज़िक्र में मशगूल हैं। बाज़ लोग उन में बिखरे बालों वाले हैं और खुश्क खालों वाले और सिर्फ एक कपड़े वाले हैं। (नंगे बदन सिर्फ लुंगी उनके पास है) जब हुजूर स.अ.व. ने उनको देखा तो उनके पास बैठ गए और इर्शाद फरमाया "तमाम तारीफें अल्लाह ही के लिए हैं जिसने मेरी उम्मत में ऐसे लोग पैदा फरमाए के खुद मुझे उनके पास बैठने का हुक्म है"

(इब्ने जरीर, तिबरानी)

हज़रत सलमान फार्सी र.अ. वग़ैरा सहाबा कराम की एक जमात अल्लाह के ज़िक्र में मश्गूल थी के हुज़ूर अकरम स.अ.व. तशरीफ लाए तो यह लोग चुप हो गए। हुज़ूर अकरम स.अ.व. ने फरमाया के तुम लोग क्या कर रहे थे? अर्ज़ किया के ज़िक्रे इलाही में मश्गूल थे। हुज़ुर स.अ.व. ने फरमाया मैं ने देखा के रहमते इलाही तुम लोगों पर उतर रही है तो मेरा भी दिल चाहा के तुम्हारे साथ शिर्कत करूँ। फिर इर्शाद फरमाया के اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ अल्लाह तआला ने मेरी उम्मत में ऐसे लोग पैदा किये जिनके पास बैठने का मुझे हुक्म हुआ।

यह कैसी रूह परवर ईमान आफ्रीं और दिल व जाँ नवाज़ खुश ख़बरी है के अल्लाह के हबीब अहमदे मुख़्तार दो आलम के ताजदार मोहम्मद मुस्तफा स.अ.व. अल्लाह तआला का ज़िक्र करने वालों को तलाश फरमा रहे हैं। उनके साथ अपनी हम नशीनी और रिफाकत पर अल्लाह तआला का शुक्र अदा फरमा रहे हैं। जिनकी एक झलक देख लेना अहले ईमान के मोहब्बत की मेराज है। वोह ज़ाकरीन को तलाश फरमाकर अपनी खुशनूदी और अपनी हम नशीनी की बशारत दे रहे हैं। अल्लाह और रसूल के नाम पर मर मिटने वालों के लिए क्या ज़िक्र की फज़ीलत के लिए किसी दलील को बयान करने की ज़रूरत बाकी है?

ज़ाकीरों पर रहमते इलाही का साया ः

हुजूर अक्रम स.अ.व. फरमाते हैं जब लोग अल्लाह का ज़िक्र करने के लिए जमा होते हैं तो मलाएका फौरन उन पर घेरा डाल लेते हैं। रहमते इलाही ज़ाकीरों पर साया फुगन हो जाती है। उन पर सकीना उतरता है और अल्लाह तआला अपनी मज्लिस में ज़िक्र करने वालों का तज़्किरा फरमाता है। (सही मुस्लिम)

“ वही (अल्लाह) है के दरूद भेजता है तुम पर वह और उसके फरिश्ते”

(सूरह अहज़ाब आयत 43)

ज़ाकिर की रूह उसकी मर्ज़ी से कब्ज़ होगी ः

इमाम अबुल-कासिम कशीरी र.अ. फरमाते हैं। मल्कुल मौत ज़ाकिर की रूह उसकी इजाज़त से ही कब्ज़ करता है।

(रिसालए कशीरिया)

आख़री कलाम ः

हुजूर माज़ बिन जबल र.अ. हुजूर स.अ.व. से दर्याफ्त फरमाया के सब आमाल में अल्लाह के नज़्दीक मेहबूब तरीन अमल क्या है? हुजूर अकरम स.अ.व. ने इर्शाद फरमाया के तेरी इस हाल में मौत आए के तू अल्लाह के ज़िक्र में रतुबुल्लिसान हो।

(तिबरानी व बेहकी)

कलामे आख़िर से मुराद सूफिया कराम ने वोह हदीस मुराद ली है

مَنْ كَانَ آخِرُ كَلَامِهِ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ دَخَلَ الْجَنَّةَ.

तर्जुमा ः जिसका आख़री कलाम لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ हो तो उसको जन्नत में दाखिल कर दिया जाएगा।

ग़ाफिलीन का हाल

وَمَنْ اَعْرَضَ عَنْ ذِكْرِىْ فَاِنَّ لَهٗ مَعِيْشَةً ضَنْكًا وَّ نَحْشُرُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اَعْمٰى.

तर्जुमा ः और जिसने मेरी याद से मुँह फेरा तो बेशक उसके लिए तंग ज़िंदगानी है हम उसे क़यामत के दिन अंधा उठाएँगे।

(सूरह ताहा आयत124)

ग़ाफिल पर शैतान मुसल्लत कर दिया जाता है ः

وَمَنْ يَّعْشُ عَنْ ذِكْرِ الرَّحْمٰنِ نُقَيِّضْ لَهٗ شَيْطٰنًا فَهُوَ لَهٗ قَرِيْنٌ۔

तर्जुमा ः और जो शख़्स रहमान की याद से ग़फ्लत करे हम उस पर एक शैतान मुकर्रर कर देते हैं वही उसका साथी रहता है।

(सूरह ज़ख़्रफ आयत **36**)

शैतान ग़ाफिल के क़ल्ब पर अपना तसल्लुत जमा कर उसके क़ल्ब को दारूल-शर बना लेता है।

مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ तर्जुमा ः वस्वसा डालने वाले के शर से

(सूरह नास)

اَلْخَنَّاسِ के मानी खिसक जाने वाला, यह शैतान की सिफत है जब अल्लाह का ज़िक्र किया जाए तो यह खिसक जाता है और अल्लाह की याद से ग़फ्लत बरती जाए तो दिल पर छा जाता है।

एक बुजुर्ग का किस्सा नक़्ल किया है के उन्होंने हक सुब्हानहू से दुआ की शैतान के वस्वसा डालने की सूरत उन पर मुन्कशिफ हो जाए के किस तरह वस्वसा डालता है तो उन्होंने देखा के दिल के बाएँ तरफ मूँढे के पीछे मच्छर की शक्ल से बैठा हुआ है। एक लंबी सी सूँड मुँह पर है जिस से सूई की तरह से दिल की तरफ ले जाता है। दिल को ज़ाकिर पाता है तो जल्दी से इस सूँड को खींच लेता है और दिल को ग़ाफिल पाता है तो इस सूँड के ज़रिए वसावस और गुनाहों का ज़हर दिल के अन्दर दाखिल कर देता है।

एक हदीस में भी यह मज़्मून आया है के शैतान अपनी नाक का अगला हिस्सा आदमी के दिल पर रखे हुए बैठा रहता है। जब वह अल्लाह का ज़िक्र करता है तो ज़िल्लत से पीछे हट जाता है और जब वह

ग़ाफिल होता है तो उसके दिल को लुक़्मा बना लेता है।

हुजूर अकरम स.अ.व. ने इर्शाद फरमाया! ऐ लोगों لَآاِلٰـهَ اِلَّااللّٰـهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰـهِ का कसरत से ज़िक्र करो और शैतानों को थका दो। बेशक शैतान कलमाए तय्यब के ज़िक्र से ऐसा ही थक जाता है जैसे के तुम अपने ऊटों पर कसरत से सवारी करके और उन पर ज़्यादा से ज़्यादा बोझ लाद कर थका देते हो।

कलमाए तय्यब कलाम भी कलमा भी

इल्मे नहू के ऐतबार से लफ्ज़े वाहिद को कलमा और लफ्ज़े ज़ाएद को कलाम कहा जाता है। अगर कलमाए तय्यबा का मुशाहेदा करें तो कलमाए तय्यबा में छे अल्फाज़ हैं।

(1) لَآ (2) اِلٰـهَ (3) اِلَّااللّٰـهُ (4) مُحَمَّدٌ (5) رَسُوْلُ (6) اللّٰـهِ

इस लिहाज़ से इल्मे नहू में इसे कलाम कहा जाएगा मगर कलमाए तय्यबा अल्लाह की वहदानियत की रौशन दलील है इसकी वजह से बज़ाहिर कलाम को वहदानियत के ऐतबार से बा बातिन कलमा कहा जाता है।

कलमाए तय्यब बारे अमानत है

कलमाए तय्यब ईमान है, ईमान मुश्तक अज़ अमानत जिसका सेग़ा इस्मे फेल मोमिन है। मोमिन वही है जो बारे अमानत का अमीन है। لَا اِيْمَانَ لِمَنْ لَّا اَمَانَةَ لَهٗ तर्जुमा : जो अमानत दार नहीं वह साहबे ईमान नहीं। (मसनद इमाम अहमद)

إِنَّا عَرَضْنَا الْأَمَانَةَ عَلَى السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَالْجِبَالِ فَأَبَيْنَ أَنْ يَّحْمِلْنَهَا وَأَشْفَقْنَ مِنْهَا وَحَمَلَهَا الْإِنْسَانُ إِنَّهُ كَانَ ظَلُوْمًا جَهُوْلًا.

तर्जुमा ः बेशक हमने अमानत पेश फरमाई आसमानों और ज़मीन और पहाड़ों पर तो उन्होंने इसके उठाने से इन्कार किया और इस से डर गए और आदमी ने उठाली बेशक वह अपनी जान को मुशक़्क़त में डालने वाला बड़ा नादान है। (सूरह अहज़ाब आयत 72)

"ज़ुलूम" बमाने ज़ुल्मत व तारीकी और "जहूला" बमाने नादानी व जहल के " ظَلُوْمًا جَهُوْلًا. " इस लिए कहा गया के अपने नफ्स पर ज़ुल्म व जबर करके इस अमानत की हिफाज़त भी कर सकता था और नफ्स और शैतान के धोके में आ कर इसकी हिफाज़त से बेख़बर और ग़ाफिल भी रह सकता था। इसी सबब से मुस्तहिक सवाब व अज़ाब हुआ। जब इन्सान बारे अमानत उठा चुका तो हिफाज़त अमानत का अहद व पैमाँ लिया गया

اَللّٰهَ يَأْمُرُكُمْ اَنْ تُؤَدُّوا الْاَمٰنٰتِ اِلٰى اَهْلِهَا

तर्जुमा ः बेशक अल्लाह तआला हुक्म फरमाता है के अमानतें अमानत वालों को पहुँचाओ। (सूरह निसा आयत 58)

वही बारे अमानत का हुआ हामिल भी हाफिज़ भी
हवासे कल्ब जिसके हर घड़ी बेदार होते हैं

(मुसन्निफ)

जो लोग इत्तेबाए रसूल स.अ.व. अपने नफ्सों पर ज़ुल्म व जबर करके हिफाज़ते अमानत में हमा तन मसरूफ हो गए और होशियारी के साथ रहज़नों से सही व सलामत बच कर निकल गए और अमानत साहबे अमानत को बवक़्त तल्बे अमानत ब हिफाज़त तमाम पहुँचा दीं तो उनको मरातिबे आला मोमिने बर्हक़ इन्सान कामिल का दर्जा अता किया गया

और दीदारे खुदा का शर्फ हासिल हुआ और जो लोग नफ्स और शैतान के धोके में आ कर उनकी फर्माइश पूरी करने में मश्गूल रहे और अमानत में ख़यानत कर बैठे तो वह बक़दर अपनी ग़फ्लत व ख़यानत के अज़ाबे अलीम के सज़ावार हुए और उन पर से अहसने तक़्वीम की चादर उतार ली गई।

اُولٰئِکَ کَالْاَ نْعَامِ بَلْ ھُمْ اَضَلُّ. तर्जुमा ः यह लोग चार पाइयों की तरह हैं बल्के उनसे भी गए गुज़रे। (सूरह एराफ आयत 179)

खुद ना समझा आपको होगा वह क्यूँकर आदमी
आदमी होता है अपने को समझ कर आदमी

दर हकीकत हक नुमा थी हम में खूँ हैवाँ की
अब हुए हम पीर का इर्शाद सुन कर आदमी

(हक नुमा)

लिहाज़ा हर फर्दे बशर पर बारे अमानत की हिफाज़त फर्ज़ व लाज़िम है। बग़ैर पीरे कामिल के इसकी हिफाज़त मुहाल व ना मुम्किन है।

गंजे ख़फी बनोला है रूई उसकी नूर नार
हर आन खच्चे उसकी हिफाज़त में होशियार

(हज़रत ख़्वाजा बंदा नवाज़)

कलमए तय्यब रूह का लिबास

जिस तरह बदन बग़ैर कपड़ों के नंगा होता है। ठीक इसी तरह रूह भी बग़ैर कलमए तय्यब के बरहना होती है। रूह का लिबास कलमए तय्यब है। जिस तरह कसीफ का लिबास कसीफ है उसी तरह लतीफ का लिबास भी लतीफ होगा। कलमा तय्यब में दो नूर हैं। पहला अल्लाह तआला "नूर" दूसरा हज़रत मोहम्मद स.अ.व. "नूर" यानी कलमा तय्यब नूर अला नूर है। अहले दुनिया कपड़ा बदन ढांकने और खुशनुमां दिखने के लिए पहनते हैं। नूर अला नूर से खुशनुमा व नूरानी लिबास क्या होगा। अहले दुनिया ने कुछ ऐसे भी लिबास बनाए हैं जिसको ज़ैब तन करने से आग एक दर्जे हरारत तक असर नहीं करती। ना इसपे किसी बन्दूक की गोली का असर होता है, जब अहले दुनिया के लिबास में यह कमाल है तो फिर नूरानी लिबास में किस दर्जे का कमाल ना होगा। इस पर दुनिया की आग हो या फिर दोज़ख़ की आग चाहे कितने ही दर्जे हरारत क्यूँ ना हो इस लिबास पर असर अंदाज़ नहीं हो सकती। इस लिबास की मज़्बूती के बारे में खुद अल्लाह तआला इसे किले से ताबीर फरमाता है। अहले दुनिया की रूह जब बदन से निकलेगी तो बराहना होगी और कलमे वाले की रूह जब बारगाहे खुदावंद कुद्दूस में पहुँचेगी तो बालिबास होगी मरवी है के जब सूर फूँका जाएगा तो सब कब्र से नंगे निकल कर हश्र में बराहना जाएँगे सिवाए कलमे वालों के, यह नूरानी लिबास में होंगे। उनका चेहरा चमकता दमकता हुआ अर्श के साए में तख़्त नशीं होंगे। सुब्हान अल्लाह। जिस तरह बदन कपड़े का मोहताज है उसी तरह रूह कलमा तय्यब की मोहताज है।

कलमए तय्यब सौते सरमदी है

इन्साने नातिक से निकलने वाली आवाज़ को कलमा कहते हैं। तय्यब के मानी पाक के हैं। मगर तसव्वुफ की गहराई में जो ग़ैब है उसे पाक कहते हैं। क्यूँके जो चीज़ ग़ैब में है वह मेहफूज़ पाक है। कलमए तय्यब बमानी आवाज़े ग़ैबी व सौते सरमदी के होते हैं। यह आवाज़ अक़्सा आलम को मुहीत किए हुए है। कायनात के ज़र्रे ज़र्रे में यह सदा मौजूद है। जो इस आवाज़ से वाकिफ है उन्हें मुहर्रिमे अस्रार कहा गया और ना मेहरूम को ग़ाफिल, वजूदे इन्सानी मानिंदे बांसूरी के हैं जिस में नौ सुराख़ मौजूद हैं जो नफखे़ रहमानी के बाइस साज़ में आवाज़ है। अठानवे सिफत का ज़हूर सिफते हय्युन पर मुनहसिर है। जब तक साज़ में आवाज़ है तो हयात है वरना मुमात है।

ज़बर, पेश, ज़ेर की इर्फानी तफ्सीर

ज़बर, पेश, ज़ेर इन अलामतों को "एराब" कहा जाता है। जिनसे हुर्फो में हर्कत पैदा होती है। इन्हीं हर्कात व सुक्नात से बातिनी सूरत ज़हूर पज़ीर होती है जिसका तआल्लुक इन्सानी ज़िंदगी व बंदगी और तमाम आलम से मुताल्लिक हो जाता है। मस्लन जब बच्चा माँ के बतन से आलमे शहूद में अपना पहला क़दम रखता है तो बशक्ले " ज़ेर " मादरे मेहरबान के क़दमों पर होता है। फिर इसी हालत में चंद महीने गुज़रने के बाद बशक्ले " पेश " बहालते रूकू के मानिंद दोनों हाथों व पैरों

से इधर उधर चलने फिरने लगता है। फिर चंद महीने " पेश " की हालत में रहने के बाद बहालते कयाम यानी " ज़बर " हो जाता है। फिर मज़ीद अर्से दराज़ के बाद नौजवानी यानी " ज़बर " से " खड़ा ज़बर " बन जाता है। फिर चालीस व पचास साल की उम्र में फिर " पेश " की तरफ रवानगी करता है यानी पेशवाई करने लगता है। लोगों को नसीहत व वसीयत करने लगता है। आख़िर कार हालते अव्वल में मुन्तकिल हो कर दुनिया से रूख़सत हो जाता है। अब रही बंदगी की बात तो बंदगी का मक़्सद यही है के बंदा अल्लाह सुब्हानहु तआला की अज़मत व बुजुर्गी और जलाल को पेश रख कर अपनी खुदी के " ज़बर पना " से बारगाहे बे नियाज़ी में बसद अज़ीज़ व अदब सर बसुजूद " ज़ेर " हो जाए। नेज़ कुल आलम इन्हीं तीन हालतों में हैं। मस्लन झाड़ पहाड़ हालते कयाम यानी " ज़बर " की सूरत पर और चार पैरों वाले जानवर बहालते रूकू यानी " पेश " की सूरत में व दीगर रेंगने वाले जानवर व बहरी हैवान मछली वग़ैरा " ज़ेर " की हालत में हैं। ठीक इसी तरह आलमे मल्कूत का हाल भी के कोई फरिश्ता हालते " ज़बर " में कोई फरिश्ता हालते "पेश " में तो कोई फरिश्ता हालते " ज़ेर " में है। कुल आलम को तीन हालतों में रखने का सबब कलमए तय्यब है क्यूँके

" तख़्लीके दो आलम है कलमा "

لَآ اِلٰـهَ (ہ) اِلَّا اللّٰهُ (ہ) مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ (ہ)

कलमए तय्यब में छे लफ्ज़ चौबीस हुरूफ पर चौबीस अलामतें हैं। (ज़बर नौ बर्तबा, पेश पाँच मर्तबा, ज़ेर तीन मर्तबा, तश्दीद पाँच मर्तबा, जज़म एक मर्तबा, मद एक मर्तबा) लेकिन तीन अलामतें (तश्दीद, मद, जज़म) ज़बर, पेश, ज़ेर के मोहताज हैं। यानी असल हर्कत ज़बर, पेश, ज़ेर में मख़्फी है। जिसे इल्मे इर्फान में " हा ", " हू ", " हे " से ताबीर किया गया। इन तीनों में तीन कुव्वतें पोशीदा हैं।

ज़बर - नूर , पेश - इश्क , ज़ेर - ज़ात , इसके आगे कुछ रमूज़ को तहरीर करना ना समझ के वास्ते फिला होगा।

कलमए तय्यब गंजे मख़्फ़ी है

ज़ाते ख़ालिस हालते चूँ व चराँ अपनी ही सदाए अलस्त में मस्त व पर्दाए ला ताय्यूनी में मख़्फ़ी थे के यका यक उसे जुम्बिश सी हुई और ज़ात ने अपने ही नूर को अलाहेदा होता हुआ पाया और मुकामे अहदियत से मुकामे वहदत में आई। और उसको "हूँ" से "मैं हूँ" का इल्म हुआ और यह अकीदा कुशाई हुई के वह बे शुमार गंजे मख़्फ़ी और ख़ज़ाने की मालिक है और अपने आपको सबआ साफात से मुर्सा पाई (حَیٌّ، عَلِیْمٌ، مُرِیْدٌ، قَدِیْرٌ، سَمِیْعٌ، بَصِیْرٌ، کَلِیْمٌ) तो वह अपनी ही पहचान की ओर मुतवज्जा हुई और अपने ही आप में तनज़्जुल की। ज़ात मुकामे आला से तनज़्जुल करके नूर हुई और नूर से भेद हुई और भेद से अम्रे रब्बी यानी मौजूद अपने वजूद का अपने ही आप में ज़हूर फरमाया और जब अपनी पहचान का शौक व वलवला हुवा तो फर्ते इश्क से वह अपने ही वजूद को खो दिया। यानी ख़ार्जी सूरत में मख़्फ़ी हो कर ज़मीन व आसमान और तमाम आलमों का मज़हर हो गया। आप इसे ख़ारिज में यूँ समझिये के अल्लाह , रसूल और मोहम्मद से ज़ाहिर हुआ और दाखिल में ज़ात, नूर, भेद हुआ। फिर अपनी पहचान के लिए वजूदात में वाजिबुल-वजूद , मुम्किनुल-वजूद , मुम्तनुल-वजूद , आरिफुल-वजूद , वाहिदुल-वजूद , शाहिदुल-वजूद हुआ या फिर यूँ समझिये के ज़ात , नूर , सिर्र , रूह , दिल , नफ्स हुआ यानी कलमए तय्यब لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ हुआ।

यह छे दीदारे तनज़्जुलात से अल्लाह तआला ने अपनी पहचान फरमाई या यूँ समझो के "کُنْ" से "فَیَکُوْنُ" हुआ।

तालीम ख़ास राज़ फाश

लुटाएँ क्यूँ ना दौलते इल्मे लुदन्नी को
तसर्रूफ में हमारे इन दिनों है मुल्क इर्फां का
(वतन)

अल्लाह तआला ने हर नबी को एक एक सिफत का मज़हर बनाया है। किसी को सफी अल्लाह किसी को रूह अल्लाह किसी को कलीमुल्लाह किसी को ख़लीलुल्लाह वग़ैरा लेकिन हमारे नबीए करीम स.अ.व. को अपनी ज़ात का मज़हरे अतम बनाकर अपनी नेअमतों का इख़्तेताम व दीन को मुकम्मल और नबूवत को ख़त्म फरमा दिया। इस लिए ज़हूरे ज़ात के बाद फिर किसी नबी की ज़रूरत बाकी नहीं रही। इसी लिए मोहम्मद रसूल अल्लाह स.अ.व. ज़हूरे ज़ात का इन्तेहाई मुकाम हैं इसी लिए सूफिया कराम ने इसी कलमा لَآ اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰـهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ के उरूज व नुज़ूल को तए करके विलायत का बातिनी मुकाम हासिल फरमाया। चूँके कलमे की इब्तेदा " لَا " और इन्तेहा " اللّٰه " है। इस लिए इस्मे ज़ात अल्लाह ज़ाकिर का इन्तेहाई मुकाम है। कलमे की शाने उरूज को सूफिया कराम ने इस तराह बताया के " لَا " नासूत , आलमे शहादत , वाजिबुल-वजूद , मर्तबा नफ्स " اِلٰـهَ " मल्कूत , आलमे इम्साल मुम्किनुल-वजूद , मर्तबा दिल " اِلَّا اللّٰـهُ " जबरूत , आलमे अर्वाह , मुम्तनुल-वजूद , मर्तबा अम्रे रब्बी " مُحَمَّدٌ " लाहूत , आलमे सिर्रे मोहम्मदी यानी हकीकते मोहम्मदी , आरिफुल-वजूद , मर्तबा वहदत " رَسُوْل " हाहूत , आलमे नूर , اَنَا مِنْ نُّوْرِ اللّٰهِ وَ كُلُّ خَلَائِقِ مِنْ نُّوْرِى , वाहिदुल - वजूद , मतर्बा वाहदियत " اللّٰه " सयाहूत , आलमे ज़ात , शाहिदुल - वजूद , मर्तबा अहदियत यानी गंजे मख़्फी मुकामे वस्लत जहाँ मिजाज़ियत

हकीकत में बदल जाती है। फिर इसी मुकाम से बाज़े गश्त हुआ करती है, इसी उरूज व नुज़ूल के बाइस कमाले इन्सानियत का मुकाम हासिल होता है। मगर पीरे कामिल किसी को कलमे की सैर व तैर नसीब हुई ना हो सकती है और ना तालिब में जो कुव्वते बिल-कवा मौजूद है बिल-फेल आ सकती है जब तक तालिब बज़रियाए कसब बवास्ताए शेख़े कामिल इस मुकाम को हासिल ना करे तब तक " لَا " व " اِلَّا " की हकीकत इस्म व मुसम्मा का हाल ज़हूर व बतून के अस्रार अल्लाह मोहम्मद की यक्ताई का राज़ उस पर मुन्कशिफ नहीं हो सक्ता। मुरीद व तालिब को चाहिए के पीराने तरीकत ने जो नेअमत व अमानत दरूने कल्ब अता की गई हैं उसकी हिफाज़त करें। उस पर शाकिर व साबिर रहें। किसी शक व शुबे में मुब्तेला हुए बग़ैर जो ज़िक्र का तरीका तालीम फरमाया गया है उस पर अमल करें यानी यही ज़िक्र मज़कूर तक पहुँचा देगा।

कुव्वते इश्क से हर पस्त को बाला करदे
दहर में इस्मे मोहम्मद से उजाला करदे

(अल्लामा इक़्बाल)

हुज़ूर अकरम स.अ.व, के इस्मे मोहम्मद के वसीले से मुसम्मा की आश्नाई हो जाएगी। ख़याल रहे कलमा " لَآ اِلٰهَ " में ग़ैरूल्लाह की नफी है। तरीकए नफी पीरे कामिल से पाए बग़ैर बिला फहम हकीकत " لَآ اِلٰهَ " गर कहे तो कुफ्र है। " اِلَّا اللّٰهُ " मुकामे अस्बात है इस ज़िक्र " لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ " के साथ ही साथ इस्मे अल्लाह की वसअत को भी पेशे नज़र रखें के अल्लाह इस्मे ज़ात मज्मुआए सिफात है इस लिए ज़ाकिर को मज़्कूर के सिफात भी पेशे नज़र रखना चाहिए वर्ना सिफात के नज़र अंदाज़ होने से महज़ इस्म के विर्द से बातिन में कोई इन्कलाब पैदा हो नहीं सक्ता। इस हकीकत को भी पेशे नज़र रखें के ज़ात हमेशा वजूदी सिफात से मौसूफ है। मस्लन (حَیٌّ، عَلِیْمٌ، مُرِیْدٌ، قَدِیْرٌ، سَمِیْعٌ، بَصِیْرٌ، کَلِیْمٌ) (हय्युन, अलीमुन, मुरीदुन, कदीरून, समीउन, बसीरून, कलीमुन)

वग़ैरा सब वजूदी सिफात हैं। बर्ख़िलाफ इसके ख़ल्क अदमी ज़ात है और अदमी सिफात है जो वजूदी सिफात का अज़्दाद हैं। मस्लन ज़ाते हक "حَیّ" यानी ज़िंदा है ख़ल्क इसके मुकाबिल में "مَیِّتْ" यानी मुर्दा, इसी तरह वह अलीम है और यह जाहिल, वह क़दीम है यह हादिस, वह क़दीर है यह आजिज़, वह समी है यह बहरा, वह बसीर है यह अंधा, वह कलीम है यह गूँगा, वह बाकी है यह फानी, वग़ैरा इसी मफ्हूम के पेशे नज़र कलमे का ज़िक्र जारी रखा जाए मुफीद नताएज बरआमद होंगे। "اِلَّا اللّٰهُ" की वज़ाहत के ज़िमन में इस्मे अल्लाह की जामियत को भी क़दरे वाज़ेह कर देना मुनासिब समझता हूँ जिसका हर लफ्ज़ मुकम्मल और हर जुज़ मानी ख़ेज़ है। इस्मे अल्लाह चार हुर्फो से (ا ل ل ہ) से मुश्तक है अगर लफ्ज़ "اَللّٰهُ" में से 'अलिफ' को गिरा दो तो "لِلّٰهِ" बाकी रहेगा जो ज़ात को ही बता रहा है। (لِلّٰهِ مَافِی السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْض) अगर अल्लाह का 'लामे अव्वल' भी गिरा दो तो "لَهٗ" की शक्ल पर रहता है। यह भी ज़ात को बता रहा है। (لَهُ الْمُلْکُ وَلَهُ الْحَمْدُ) अगर 'लामे सानी' भी गिरा दें तो फकत "هُو" बाकी रहता है। वह भी ज़ात की तरफ इशारा कर रहा है। (هُوَ الاول ، هُوَ الآخر ، هُوَالظاهر ، هُوَالباطن) जिस तरह उसका नाम किसी हुरूफ का मोहताज नहीं ऐसे ही उसकी ज़ात किसी की मोहताज नहीं। यही इस्मे ज़ात का कमाल और उसके जामियत की बय्यन दलील है। बर्ख़िलाफ इसके दीगर अस्माए सिफाती से कोई हुरूफ निकाल दिया जाए तो कोई माना पैदा ना हो सकेगा। कलमए तय्यब में इस्मे अल्लाह ही दाख़िल है जिसको पढ़ कर काफिर मोमिन बनता है। अगर कोई "لَا اِلٰهَ اِلَّا الرَّحْمٰنُ" कह दे या उसके दीगर इस्मों से कलमा पढ़ ले मोमिन ना होगा मगर "لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ" कहते ही दौलते ईमान से मालामाल हो जाता है। गर्ज़ "هُو" इस्मे ज़ात अल्लाह का आख़री हुरूफ ही नहीं आख़री मुकाम है जिस में ज़ात व सिफात की शान ज़हूर व बतून का राज़ शख़्स व अक्स के हकाएक, इस्म व मुसम्मा के असरार पोशीदा हैं। "هُو" ज़िक्र का इन्तेहाई मुकाम है।

जिस से ज़हूरे ज़ात यानी हकीकते मोहम्मदिया की मआरिफत हासिल होती है, इसी मआरिफत के मद्दे नज़र सूफिया कराम ने इस हकीकते हाल की जानिब इशारा किया है के " هُـو " में ज़हूरे ज़ात मज़हरे अतम " مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ " की हकीकत व मआरिफत मुज़म्मिर है। आप ही रूहे आज़म, बर्ज़खे़ कुब्रा हैं। इसी हकीकत के मद्दे नज़र साँस की आमद में ज़िक्र " لَآ اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰه " " مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ " और शुद में " هُـو " की कशिश कराई जाती है। " هُـو " की कशिश का यही राज़ है के कल्ब में जो हकीकत पोशीदा है बातिन से ज़हूर में आ जाए और लताएफे सत्ता बेदार हो जाएँ और कल्ब जारी हो जाए। जिस तरह तुख़्म में दरख़्त के सारे कैफियात मुज़म्मिर हैं उसी तरह " هُـو " में ज़ात व सिफात गै़ब व शहादत, इस्म व मुसम्मा का राज़ पोशीदा है जब तहत व फौक के शुद व मद से ज़िक्रे इलाही का तुख़्म उग कर आलमे नासूत पर मुहीत होता है तो सालिक का सरतापा वजूद ज़िक्रे इलाही का मुजस्समा बन कर मज़हरे अतम " مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ " में गुम हो जाता है। ग़र्ज़ वजूदे इन्सानी में कलमे की शान और हकीकत " هُـو " की जल्वा आराइयाँ हैं जो काबिले बयाँ नहीं अगर कुछ बयान हो सकती हैं तो इसी तराह इशारतन किनायतन हो सकतीं हैं।

एक साहबे तरीकत बड़े बुजुर्ग का इर्शाद है के इश्के खुदावंदी में एक सर मस्त को देख कर मैं उसके पास पहुँचा तो उसे देखा के वह बहरे शहूद में ग़र्क और बहरे शहूद में ग़ोते लगा रहा है। मैं ने उस से पूछा आप का नाम क्या है? जवाब दिया " هُـو " मैं ने फिर पूछा के आप कौन हैं? जवाब दिया " هُـو " फिर मैं ने पूछा के आप कहाँ से तश्रीफ लाए हैं? जवाब मिला " هُـو " मैं ने फिर अर्ज़ किया अब आप कहाँ जाने का इरादा रख्ते हैं? जवाब में फरमाया " هُـو " हर चीज़ का जवाब " هُـو " सुनते सुनते आख़िरकार मैं परेशान हो गया, और मुजीब की मुराद को ना समझ सका, तो फिर मैं ने अर्ज़ किया के " هُـو " से आप की क्या मुराद है? क्या " هُـو " से मुराद खुदाए तआला है! जिसका मुल्क है और हमेशा रहेगा

यह सुनते ही उस बुजुर्ग ने एक चींख़ मारी और मुर्दों की तरह गिर पड़ा के फिर नारा ना लगा सका और उनकी जान दीदारे शहेनशाह के इस्तेकबाल के लिए रवाना हो गई (यानी फौत हो गए)।

लिहाज़ा इसी लिए पीरे कामिल की ज़रूरत है। ताके वह अपने इल्म व अमल से तालिब के शक व शुब्हात और उसके वजूदे मोहोम की नफी करके बातिनी कुव्वत से कलमे के उरूज व नुजूल को तय कराके उसको मुजस्समे कलमा बना दे ताके वह बाख़बरी से ज़मीन पर ख़लीफतुल्लाह और आसमान पर रूह अल्लाह की तरह अपना मुकाम हासिल कर सके।

وماعلينا الا البلاغ